www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 23 | गोरखपुर | 17 दिसम्बर 2023 | पृष्ठ : 08 | मूल्यः 2/–

सिलक्यारा सुरंग 17 दिन बाद मिली नई जिन्दगी

ये चंद तस्वीरें है, उस उम्मीद की, उस मंजिल की जिसे हमने लंबी लड़ाई के बाद हासिल किया था। उत्तराखंड में सिलक्यारा सुरंग में फंसे सभी 41 मजदूरों को 28 नवंबर को सकुशल बाहर निकाल लिया गया था। इन्हें बचाने के लिए युद्ध स्तर पर रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया गया।

चार धाम यात्रा पर बन रही साढे चार किमी. लंबी सुरंग सिलक्यारा–बड़कोट सुरंग का एक हिस्सा 12 नवंबर को ढह गया था जिसके कारण उस सुरंग में काम कर रहे 41 मजदूर वहीं फंस गये थे।

उन्हें बाहर निकालने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाया गया।

देश भर की 12 से ज्यादा एजेंसी, वैज्ञानिक विशेषज्ञों की टीमें 17वें दिन दिन इस अभियान पर सफलता हासिल कीं।

ये एक टीम की कोशिशों का ही सुपरिणाम रहा जिसने दुनिया के सबसे मुश्किल रेस्क्यू ऑपरेशन को सफल बना दिया।

ऑपरेशन सुरंग के कई सुपर हीरो रहे सुरंगों में फंसे मजदूरों को बाहर निकालने की न सिर्फ पु ख्ता योजना तैयार की बल्कि चट्टान के सामने एक चट्टान की तरह रात दिन डटे रहे।

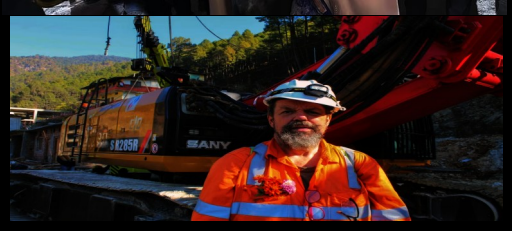

यह हैं सुपरहीरो

रैट मा. इनर्स, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, सिलक्यारा सुरंग बनाने वाली संस्था–नेशनल हाइवे, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, कार्पोरेशन, के प्रबंध निदेशक–महमूद अहमद, इंटरनेशनल टनलिंग एक्सपर्ट आर्नोल्ड डिक्स (इन्हें ऑस्ट्रेलिया से बुलाया गया) बतादें कि प्रो. डिक्स भूमिगत और परिवहन बुनियादी ढांचे के एक्सपर्ट हैं। वह भूमिगत निर्माण से जुड़े जोखिमों पर सलाह देने के साथ–साथ भूमिगत सुरंग बनाने में दुनिया में टॉप एक्सपर्ट्स में से एक माने जाते हैं। पीएमओ के पूर्व सलाहकार भास्कर खुल्वे रेस्क्यू ऑपरेशन में पुष्कर सिंह धामी और जनरल वी.के.सिंह के साथ अंत तक डटे रहे।

इस ऑपरेशन में भारतीय सेना ने भी बड़ी भूमिका का निर्वहन किया।

वाराणसी में आज पीएम मोदी

19154 करोड़ की 37 परियोजनाओं का करेंगे लोकार्पण

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 17–18 दिसंबर को गुजरात के सूरत और उत्तर प्रदेश के वाराणसी का दौरा करेंगे। 17 दिसंबर को सुबह करीब 10:45 बजे प्रधानमंत्री सूरत एयरपोर्ट पर नई इंटीग्रेटेड टर्मिनल बिल्डिंग का उद्घाटन करेंगे। सुबह करीब 11:15 बजे प्रधानमंत्री सूरत डायमंड बोर्स का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वह वाराणसी जाएंगे और करीब साढ़े तीन बजे वह विकसित भारत संकल्प यात्रा में हिस्सा लेंगे। शाम करीब 5:15 बजे वह नमो घाट पर काशी तमिल संगमम 2023 का उद्घाटन करेंगे। 18 दिसंबर को सुबह करीब 10:45 बजे प्रधानमंत्री स्वर्वेद महामंदिर जाएंगे, जिसके बाद करीब 11:30 बजे एक सार्वजनिक समारोह में इसका उद्घाटन किया जाएगा। दोपहर करीब 1 बजे प्रध. ानमंत्री विकसित भारत संकल्प यात्रा में हिस्सा लेंगे. इसके बाद, एक सार्वजनिक समारोह में लगभग 2:15 बजे, प्रधानमंत्री रुपये से अधिक की कई विकास परियोजनाओं का उद्घ ाटन और शिलान्यास करेंगे।

सूरत में पीएम

प्रधानमंत्री सूरत हवाई अड्डे के नए एकीकृत टर्मिनल भवन का उद्घाटन करेंगे। टर्मिनल भवन पीक आवर्स के दौरान 1200 घरेलू यात्रियों और 600 अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों को संभालने के लिए सुसज्जित है और इसमें पीक आवर की क्षमता को 3000 यात्रियों तक बढ़ाने का प्रावधान है, साथ ही वार्षिक हैंडलिंग क्षमता 55 ला

ख यात्रियों तक बढ़ रही है। टर्मिनल भवन, क्योंकि यह सूरत शहर का प्रवेश द्वार है। इसकी स्थानीय संस्कृति और विरासत के साथ डिजाइन किया गया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि सार आंतरिक और बाहरी दोनों में प्रतिबिंबित होना चाहिए, जिससे आगंतुकों के लिए जगह की भावना पैदा हो। उन्नत टर्मिनल भवन के अग्रभाग का उद्देश्य सूरत शहर के 'रांदेर' क्षेत्र के पुराने घरों की समृद्ध और पारंपरिक लकड़ी के काम के साथ यात्री अनुभव को समृद्ध करना है। ळत्भ्। प्ट के अनुरूप हवाई अड्डे का नया टर्मिनल भवन डबल इंसुलेटेड रूफिंग सिस्टम, ऊर्जा बचत के लिए कैनोपी, कम गर्मी बढ़ाने वाली डबल ग्लेज़िंग यूनिट, वर्षा जल संचयन, जल उपचार संयंत्र, सीवेज उपचार संयंत्र और पुनर्नवीनीकरण पानी के उपयोग जैसी विभिन्न स्थिरता सुविधाओं से सुसज्जित है। . दूसरों के बीच भूनिर्माण और सौर ऊर्जा संयंत्रों के लिए। पीएम सूरत डायमंड बोर्स का भी उद्घाटन करेंगे. यह अंतरराष्ट्रीय हीरे और आभूषण कारोबार के लिए दुनिया का सबसे बड़ा और आधुनिक केंद्र होगा। यह कच्चे और पॉलिश किए गए हीरों के साथ–साथ आभूषणों के व्यापार का एक वैश्विक केंद्र होगा।

वाराणसी में पीएम

17 दिसंबर को प्रधानमंत्री वाराणसी के कटिंग मेमोरियल स्कूल मैदान में विकसित भारत संकल्प यात्रा में हिस्सा लेंगे. वहां प्रधानमंत्री पीएम आवास, पीएम स्वनिधि, पीएम उज्ज्वला जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों से बातचीत करेंगे। एक भारत, श्रेष्ठ भारत के अपने दृष्टिकोण के अनुरूप, प्रधान मंत्री नमो घाट पर काशी तमिल संगमम 2023 का उद्घ ाटन करेंगे। इस अवसर पर प्रधानमंत्री कन्याकुमारी–वाराणसी तमिल संगमम ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाएंगे। 18 दिसंबर को प्रधानमंत्री वाराणसी के उमराहा में नवनिर्मित स्वर्वेद महामंदिर का उद्घाटन करेंगे. इस अवसर पर वह महामंदिर के भक्तों को भी संबोधित करेंगे। इसके बाद प्रधानमंत्री अपने संसदीय क्षेत्र के ग्रामीण इलाके सेवापुरी में विकसित भारत संकल्प यात्रा में हिस्सा लेंगे. वह काशी संसद खेल प्रतियोगिता 2023 के प्रतिभागियों द्वारा कुछ लाइव खेल कार्यक्रम भी देखेंगे। उसके बाद, वह कार्यक्रम के विजेताओं के साथ बातचीत भी करेंगे। कार्यक्रम के दौरान वह विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों से भी बातचीत करेंगे।

देश के कोने–कोने में पहुंच रही मोदी की गारंटी वाली गाड़ी

'विकसित भारत के संकल्प में शहरों की बहुत बड़ी भूमिका'

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' (शहरी) के लाभार्थियों से संवाद किया। 2024 चुनाव से पहले पीएम मोदी लोगों के बीच लगातार पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। इस दौरान अपने संबोधन में मोदी ने कहा कि हमारे देश की आत्मनिर्भर महिलाएं न सिर्फ अपना भरण–पोषण कर रही हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी वरदान बन रही हैं। हमारी सरकार ऐसे प्रतिबद्ध और मेहनती लोगों के लिए लगातार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के संकल्प के साथ मोदी की गारंटी वाली गाड़ी देश के कोने–कोने में पहुंच रही है। पीएम नरेंद्र मोदी ने तेलंगाना, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और मिजोरम में विकसित भारत संकल्प यात्रा को हरी झंडी दि खाई।

मोदी ने कहा कि इस यात्रा को शुरू हुए एक महीना पूरा हो चुका है। इस एक महीने में ये यात्रा हजारों गांवों के साथ–साथ डेढ़ हजार शहरों में भी पहुंच चुकी है। इनमें से अधिकतर शहर छोटे शहर हैं। उन्होंने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा को हरी झंडी भले ही मोदी ने दि खाई है, लेकिन सच्चाई ये है कि आज देशवासियों ने उस यात्रा की कमान संभाल ली है। एक जगह जहां पर यात्रा खत्म होती है, वहां से दूसरे गांव या शहर के लोग इस यात्रा की अगुवाई करने लग जाते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि विकसित भारत के संकल्प में हमारे शहरों की बहुत बड़ी भूमिका है। आजादी के लंबे समय तक जो भी विकास हुआ, उसका दायरा देश के कुछ बड़े शहरों तक सीमित रहा। लेकिन आज हम देश के टीयर 2 और टीयर 3 शहरों के विकास पर बल दे रहे हैं। देश के सैंकड़ों छोटे शहर ही विकसित भारत की भव्य इमारत को सशक्त करने वाले हैं। उन्होंने कहा कि अमृत मिशन हो या स्मार्ट सिटी मिशन, इनके तहत छोटे शहरों में मूल सुविधाओं को बेहतर बनाया जा रहा है। गरीब हो, न्यू मिडिल क्लास हो, मिडिल क्लास हो या संपन्न परिवार हो, हर किसी को बढ़ती हुई सुविधाओं का लाभ मिल रहा है।

विजय दिवस का जश्न

विजय दिवसः 1971 के युद्ध नायकों को श्रद्धांजलि दी गई

नई दिल्ली। 1971 में पाकिस्तान पर भारत की जीत की याद में 16 दिसंबर को विजय दिवस मनाया जाता है ; एक युद्ध जिसके कारण बांग्लादेश का निर्माण हुआ। यह दिन देश की सुरक्षा के लिए सैनिकों के बलिदान का सम्मान करता है। इसलिए, पूरे भारत में नई दिल्ली के युद्ध स्मारक, जम्मू–कश्मीर के बलिदान स्तंभ, समुद्री जल स्मारक पर विजय सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

राष्ट्रपति ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 'एट होम' में भाग लिया विजय दिवस की पूर्व संध्या पर आर्मी हाउस में स्वागत समारोह। उन्होंने 'भारत के राष्ट्रपति' के माध्यम से एक्स पर एक पोस्ट करके सैनिकों को श्रद्धांजलि भी अर्पित की। एक्स हैंडल में कहा गया, ''देश 1971 के युद्ध के दौरान हमारे सशस्त्र बलों द्वारा किए गए निस्वार्थ बलिदान को कृतज्ञतापूर्वक याद करता है।'' विजय दिवस पर, मैं उन बहादुरों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने अद्वितीय साहस दिखाया और ऐतिहासिक जीत हासिल की।'' नरेंद्र मोदी ने दी श्रद्धांजलि

विजय दिवस पर, हम उन सभी बहादुर नायकों को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने 1971 में निर्णायक जीत सुनिश्चित करते हुए कर्तव्यनिष्ठा से भारत की सेवा की।

उनकी वीरता और समर्पण राष्ट्र के लिए अत्यंत गौरव का स्रोत है। उनका बलिदान और अटूट भावना हमेशा लोगों के दिलों और हमारे देश के इतिहास में अंकित रहेगी। भारत उनके साहस को सलाम करता है और उनकी अदम्य भावना को याद करता है,

विजय दिवस पर याद किये गये वीरगति प्राप्त जवान, अर्पित किये गये श्रद्धा सुमन

मंडी। जिला भाषा एवं संस्कृति विभाग, पूर्व सैनिक लीग ने 1971 में शहीद हुए सैनिकों की याद में इंदिरा मार्केट में स्थापित शहीद स्मारक में स्वर्णिम विजय दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान ब्रिगेडियर कुशाल ठाकुर बतौर मुख्यातिथि मौजूद रहे।

सैकड़ों पूर्व सैनिकों ने दो मिनट का मौन रख कर शहीदों को याद किया। पुलिस टुकड़ी ने गार्ड ऑफ ऑनर की सलामी देकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस दौरान जिलेभर से पूर्व सैनिक मौजूद रहे। सीने पर सेना मेडल सजाए सभी पूर्व सैनिकों ने एक दूसरे से मिल कर पुरानी यादों को ताजा किया।

इस दौरान डिफेंस वुमन वेलफेयर एसोसिएशन की महिलाओं ने देशभक्ति कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में 1978 में जैकरिफ से हवलदार सेवानिवृत्त हुए रिवालसर से आए हवलदार पूर्ण चंद ने बताया कि 15 वर्ष तक देश सेवा की है। सैनिकों की याद में आयोजित होने वाले कार्यक्रम सैनिकों के लिए मेले की तरह होते हैं। जहां सभी वर्षों बाद एक दूसरे से मिल पाते हैं और पुरानी यादों को ताजा करते हैं। मुख्यातिथि ब्रिगेडियर कुशाल ठाकुर ने कहा कि 16 दिसंबर 1971 को पूर्वी पाकिस्तान को आजाद करवाया गया था, जो आज बांग्लादेश के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध में देश के 3845 वीर सैनिकों ने शहादत पाई थी। इसमें प्रदेश के 190 सैनिक शहीद हुए थे। इस दौरान वीर नारी चिंता देवी, कृष्णा देवी तथा कई पूर्व सैनिकों को सम्मानित किया गया। 1978 में नायक पद से सेवानिवृत्त हुए दूसरा खाबू रिवालसर के रूप लाल ने बताया कि वह डोगरा रेजीमेंट में थे। आधुनिक युग में सैनिक समारोहों में बहुत बदलाव आया है। पूर्व सैनिक लीग के महासचिव कैप्टन हेतराम शर्मा ने बताया कि 1971 में भारत–पाक युद्ध को 16 दिसंबर को 50 साल पूरे हो गए हैं। इसे अब स्वर्णिम विजय दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। कर्नल एमके मंडयाल ने भी अपने अनुभवों और युद्ध की यादों को साझा किया। कर्नल केके मल्होत्रा और जिला भाषा अधिकारी प्रोमिला गुलेरिया ने भी अपने विचार प्रकट किए।

इस अवसर पर कर्नल भीम सिंह, कर्नल हरीश वैद्य, कर्नल रविंद्र सिंह, कर्नल वीरेंद्र तपवाल, कैप्टन जैसी सैनी, उत्तम सिंह, भीम सिंह, वीर सिंह, मेघ सिंह, एसएम टेक सिंह, हवलदार केहर सिंह, डिफेंस वुमन वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्ष आशा ठाकुर, सरिता, डिंपल, नीतू, मीनू, धर्मा, जस्सो, अंजना, कुसुम, शांता, मंजू, द्रोपदी, हितेंद्रा, ऊषा आदि मौजूद रहे।

वीरगति प्राप्त सैनिकों वीरांगनाओं के परिजनों को किया गया सम्मानित

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को गांधी पार्क, देहरादून में विजय दिवस के अवसर पर शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। विजय दिवस पर मुख्यमंत्री ने भूतपूर्व सैनिकों, वीरांगना.ओं को शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह् देकर सम्मानित किया। विजय दिवस के अवसर पर आयोजित निबंध एवं कला प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को भी मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर घोषणा की कि सैनिक आश्रितों को भर्ती पूर्व दिये जाने वाले प्रशिक्षण के दौरान भोजन व्यवस्था के लिए प्रतिदिन दी जाने वाली धनराशि 80 रूपये से बढ़ाकर 225 रूपये प्रति प्रशिक्षणार्थी की जायेगी। राज्य के गढ़वाल और कुमांऊ मण्डल में सैनिक आश्रित युवाओं को सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास विभाग, उत्तरा खण्ड द्वारा 56 दिनों का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को गांधी पार्क, देहरादून में विजय दिवस के अवसर पर शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। विजय दिवस पर मुख्यमंत्री ने भूतपूर्व सैनिकों, वीरांगनाओं को शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिन्ह् देकर सम्मानित किया। विजय दिवस के अवसर पर आयोजित निबंध एवं कला प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को भी मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर घोषणा की कि सैनिक आश्रितों को भर्ती पूर्व दिये जाने वाले प्रशिक्षण के दौरान भोजन व्यवस्था के लिए प्रतिदिन दी जाने वाली धनराशि 80 रूपये से बढ़ाकर 225 रूपये प्रति प्रशिक्षणार्थी की जायेगी। राज्य के गढ़वाल और कुमांऊ मण्डल में सैनिक आश्रित युवाओं को सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा 56 दिनों का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज का दिन भारतीय सेना के वीर जवानों के अदम्य साहस, शौर्य और पराक्रम का उत्सव मनाने का दिन है। 1971 का युद्ध अमानवीयता पर मानवता, दुराचार पर सदाचार और अन्याय पर न्याय की जीत का युद्ध था। आज ही के दिन वर्ष 1971 में पाकिस्तान के 93,000 से अधिक सैनिकों ने हमारे वीर बहादुर सैनिकों के समक्ष घुटने टेके थे। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, किसी भी सेना का यह सबसे बड़ा आत्मसमर्पण था। यह युद्ध भारत के वीरों के अटल संकल्प और बलिदान का प्रत्यक्ष उदाहरण था। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड की भूमि, देवभूमि होने के साथ–साथ पराक्रम और बलिदान की भूमि भी है। 1971 के भारत–पाक युद्ध में वीरभूमि उत्तराखंड के 255 जवानों ने भारत मां की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। इस युद्ध में अपने अदम्य साहस और पराक्रम का परिचय देने वाले प्रदेश के 74 सैनिक विभिन्न वीरता पदकों से सम्मानित हुए थे। ऐसे सभी वीरों के बलिदान की अमर गाथाएं आज भी हमारे युवाओं को प्रेरणा देने का काम करती हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन के अनुरूप देहरादून में पांचवे धाम सैन्य धाम का निर्माण कार्य प्रगति पर है। यह धाम उन सभी वीरों को हमारी ओर से एक विनम्र श्रद्धांजलि होगी जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह किये बिना तिरंगे की शान के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। यह सैन्य धाम आने वाली पीढ़ियों के लिए राष्ट्र आराधना के एक दिव्य प्रेरणा पुंज के रूप में कार्य करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जवानों का मनोबल तेजी से बढ़ा है। आज हमारे सैनिक अत्याधुनिक हथियारों से लैस हैं, उनकी सहायता और सुरक्षा के लिए विश्व स्तरीय उपकरण उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। आज हमारे सैनिकों का मनोबल इतना ऊंचा है कि वो दुश्मन के घर में घुस कर उस पर कार्रवाई करने में समर्थ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड के मुख्य सेवक के रूप में उनका प्रयास रहता है कि सैन्य परिवारों के लिए विशेष योजनाएं बने, जिससे एक सैनिक को युद्ध में लड़ते समय अपने परिवार की चिंता न हो। राज्य सरकार प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में सैनिकों और उनके परिवार को मिलने वाली सुविधाओं में वृद्धि करने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार ने उत्तरा खण्ड के वीरता पदक से सम्मानित सैनिकों को देय एकमुश्त अनुदान राशि में भी वृद्धि की है। जिसके तहत परमवीर चक्र से सम्मानित सैनिक को 30 लाख से 50 लाख, महावीर चक्र 20 लाख से 35 लाख, कीर्ति चक्र 20 लाख से 35 लाख, वीर चक्र और शौर्य चक्र 15 से 25 लाख और सेना गेलेन्ट्री मेडल 07 लाख से 15 लाख करने को मंजूरी दी गई। उत्तराखण्ड से द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों की वीरांगनाओं एवं वेटरन की पेंशन प्रतिमाह 8 हजार रूपये से बढ़ाकर 10 हजार रूपये की है।

बीकानेर में अन्तराष्ट्रीय ऊँट उत्सव का आयोजन 11 से 14 जनवरी से होगा. जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद कलाल ने मंगलवार कलेक्ट्रेट सभागार में इस संबंध में आयोजित बैठक में यह जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि आगामी 'अंतराष्ट्रीय ऊंट उत्सव' 'आइकंस ऑफ़ बीकानेर' की थीम पर आयोजित किया जाएगा।

सोल्लासपूर्वक मनाया गया विजय दिवस

जयपुर। राष्ट्र में गत शनिवार को विजय दिवस मनाया गया। 1971 में 13 दिनों तक चले युद्ध के बाद 16 दिसंबर को ही भारत ने पाकिस्तान पर जीत हासिल की थी। युद्ध में प्राण न्योछावर करने वाले सैनिकों को श्रद्धांजलि दी गई।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर और मुख्यमंत्री भजन लाल षर्मा ने सशस्त्र बलों के वीर जवानों को श्रद्धांजलि दी। जयपुर के प्रेरणा स्थल पर षहीदों को याद किया। मौके पर ले.जनरल सगत सिंह की जीवनी पर आधारित पुस्तक का विमोचन भी किया गया। भरतपुर के लोहागढ़ स्टेडियम के शहीद स्मारक झुंझनू के षहीद स्मारक पर विजय दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया।

बाड़मेर में शहीद स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित किया इस दौरान वीरांगनाओं और शहीदों के परिजनों का सम्मान किया गया।

श्रीगंगानगर में वॉर मेमोरियल पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर बच्चों ने देशभक्ति आधारित गीतों पर संस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। आयोजन के दौरान शहीदों को प्रतीकात्मक तोपों की सलामी भी दी गई।

सीकर में 1971 के युद्ध में शहीदों को याद किया गया। शहीद स्मारक पर वीरांगनाओं का सम्मान किया गया।

हमारी कृषि उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई : सूर्यप्रताप शाही

गोरखपुर। प्रदेश के कृषि, कृषि शिक्षा एव अनुसंधान विभाग मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने सर्किट हाउस एनेक्सी भवन सभागार में मण्डलीय रबी उत्पादकता गोष्ठी 2023 में गोरखपुर, बस्ती एवं आजमगढ़ मण्डल से सम्बंधित किसानों, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) की समस्याओ व सुझाओं को सुना और सम्बंधित अधिकारियों को समस्याओ के निस्तारण हेतु दिशा निर्देश दिये। इस अवसर पर उन्होंने कृषि व उद्यान विभाग द्वारा लगाई गयी प्रदर्शनी में लगे स्टालों का निरीक्षण व अवलोकन किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि कृषि मंत्री ने कहा कि हमारी कृषि उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। उत्पादकता वृद्धि हेतु किसान पूर्ण प्रयास करे और सरकार हर सम्भव मदद करेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी का संकल्प है कि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है। विकसित राष्ट्र का मतलब है कि भारत आत्मनिर्भर हो, और इसमें कृषि का महत्वपूर्ण योगदान होगा। मंत्री जी ने किसानो, किसान उत्पादक संगठनों एवं संबंधित अधिकारियों से आग्रह करते हुए कहा कि पीएम प्रणाम योजना को अपनाएं यह एक महत्वाकांक्षी योजना है इसके अंतर्गत फसलों में प्रयोग की जाने वाली रसायन खादों व पेस्टिसाइड का प्रयोग धीरे–धीरे कम करके ऑर्गेनिक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जायेगा। पराली प्रबंधन को विशेष रूप से अपनाया जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में विशेष रूप से पूर्वान्चल में कृषि उत्पादकता कम है। उत्पादकता वृद्धि के लिए वैज्ञानिक तरीके के साथ साथ उचित समय पर खेती और बीज, उर्वरक तथा सिंचाई की संतुलित मात्रा में उपयोग से कृषि उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि की जा सकती है। उन्होंने कहा कि जलवायु अनुकूल कृषि जिसमें कम पानी, रसायन की आवश्यकता हो उसे अपनाये। किसानों की विभिन्न समस्याओ पर उन्होंने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के उत्पादन के लिए बीज विकास निगम लगातार प्रयासरत है। उन्होंने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि मंडलों की सभी नहरो की साफ सफाई करके तत्काल रूप से उनमें पानी उपलब्ध करायें। बिजली विभाग यांत्रिकी दोषो को तत्काल ठीक कराये। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार सोलर फेंसिंग के लिए सकारात्मक पहल कर रही है। सोलर पम्प से सम्बंधित खराबी के लिए कृषि सचिव को निर्देश दिया कि मण्डलध्जनपद स्तर पर सर्विस सेन्टर बनाये जाये। किसान उत्पादक संगठनों को भी साख सुविधा सरलता से प्राप्त हो इसके लिए भी पूरे प्रयास किये जा रहे है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री जी ने निजी नलकूपों के बिजली बिल को भी माफ कर दिया, गन्ना भुगतान भी समय पर हो रहा है। दलहन, तिलहन के मिनी कीट वितरित करके इनके उत्पादन में वृद्धि की जा रही है। गोष्ठी में किसानों द्वारा फसल बीमा योजना के सम्बंधित मुद्दा उठाने पर मंत्री जी ने कहा कि के0सी0सी0 के माध्यम से ऋण लेते समय किसान द्वारा लिखित रूप से असहमति प्रमाण पत्र देने पर फसल बीमा योजना की प्रिमियम नही काटी जायेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में फसलों का डिजिटल सर्वे कराया जा रहा है जिसके माध्यम से उस स्थान की पृष्ठभूमि के सभी आंकड़े एकत्रित कर, भविष्य में उस जलवायू अनुकूल फसल उत्पादित करके उत्पादन बढ़ाया जा सके।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि मत्स्य मंत्री संजय निषाद ने कहा कि मत्स्य, कृषि व उद्यान विभाग समन्वय बनाकर किसान कल्याण से संबंधित योजनाओं का संचालन करें, ताकि किसान की आय को दोगुना करके उत्तर प्रदेश के किसान समृद्ध व खुशहाल जीवन व्यतीत कर सके। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मछुआरा समाज को समाज में सम्मान देने का कार्य किया गया है। उन्होंने कहा कि मत्स्य विभाग मछुआ कल्याण कोष के माध्यम से मछुआ समाज के द्वारा बैंक से किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ऋण लेने पर 4 प्रतिशत ब्याज का भुगतान मत्स्य विभाग करेगा, इस प्रकार मछुआ समाज को शून्य ब्याज दर ऋण प्राप्त होगा, इसी प्रकार जिन मछुआ समाज के लोगों का आयुष्मान कार्ड अभी तक नहीं बन पाया है उनका 5 लाख रुपए तक का ईलाज मछुआ कल्याण कोष के माध्यम किया जाएगा। उन्होंने अपने विभाग के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि जहां पर भी इस प्रकार की गोष्ठियां और स्टॉल लगाए जाए वहां पर मत्स्य विभाग का स्टाल भी अनिवार्य रूप से लगाया जाए। मंत्री जी ने कहा कि जलाशय में जलाशय योजना के माध्यम से महिलाओं को जोड़कर उनको आर्थिक सशक्तिकरण बनाने के रूप में उठाया गया कदम है।

इस अवसर पर सचिव कृषि राज शेखर ने कहा कि हमें कृषि उत्पादकता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि इस प्रकार की गोष्ठियां ग्राम पंचायत स्तर पर भी आयोजित कर के किसानो की समस्याओ का निस्तारण और विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता का कार्यक्रम सम्पन्न कराया जायें। उन्होंने कहा कि किसान अपने मेड़ो पर वृक्षोरापण अवश्य करें। गोष्ठी में मण्डलों के विभिन्न कृषि वैज्ञानिक व कृषि, उद्यान विभाग के अधिकारी गण आदि ने भी कृषि उत्पादकता में वृद्धि, प्राकृतिक कृषि, जैविक कृषि तथा उनकी अतिरिक्त आय वृद्धि उपाय के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

गोष्ठी में कृषि योजनाओं, विभिन्न कृषि मददों और किसान कल्याण के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं से अवगत कराया। गोष्ठी में किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) पर भी विस्तृत चर्चा की गयी।

इस अवसर पर सांसद रवि किशन शुक्ल, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 विजेंद्र सिंह, राष्ट्रीय बीज निगम के निदेशक, उद्यान विभाग के निदेशक ने किसानों, किसान उत्पादक संगठनों वह उपस्थित अधिकारियों को संबोधित किया।

शिक्षा के क्षेत्र में मोहन यादव का निर्णय

मध्य प्रदेश के नई सरकार ने कुल 570 शासकीय महाविद्यालयों में कॉलेज को 'पीएम कॉलेज ऑफ एक्सिलेंस' बनाने का फैसला लिया है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने शिक्षा के क्षेत्र में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। मोहन यादव ने अपने पिछले कार्यकाल यानी शिक्षा मंत्री रहते हुए शिक्षा में कई नवाचार किए गए थे।

भोपाल। मध्य प्रदेश की नई सरकार कुल 570 शासकीय महाविद्यालयों में से हर जिले में कॉलेज को 'पीएम कॉलेज ऑफ एक्सिलेंस' के रूप में उन्नत करेगी। प्रदेश के नए मुख्यमंत्री मोहन यादव ने शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्व फैसला लिया है। माना जा रहा है कि इस फैसले के बाद राज्य में उच्च शिक्षा नई ऊंचाइयों को छू सकती है।

दरअसल शिवराज सरकार में शिक्षा मंत्री रहते हुए मोहन यादव ने राज्य में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) को लागू किया था।

मकर संक्रांति के मद्देनजर मुख्यमंत्री ने की बैठक, दिये दिशानिर्देश

गोरखपुर। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखनाथ मंदिर सभागार में मकर संक्रान्ति मेले के तैयारियों के सम्बन्ध में आयोजित बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिया कि मकर संक्रान्ति मेले की सभी तैयारी पूरी कर ली जाये और मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा एंव व्यवस्था उपलब्ध करायें। उन्होंने कहा कि नव वर्ष के पहले दिन से ही मंदिर में भारी संख्या में लोग आने लगते है इसके दृष्टिगत भीड़ को नियंत्रित करने तथा जाम आदि न लगने पाये इसके लिये लिए पुलिस प्रशासन पुरी व्यवस्था करे, सुनिश्चित करें कि वाहन पार्किंग स्थल में खड़े हों, वाहन स्टैण्ड पर प्रकाश, सुरक्षा, आलाव, सीसीटीवी एंव साफ सफाई की व्यवस्था हों। उन्होंने कहा कि नेपाल एंव बिहार से भी लोग खचड़ी चढ़ाने आते हैं इसलिए सुरक्षा के व्यापक प्रबंध हो। उन्होंने कहा कि किसी से दुर्व्यवहार न हो। उन्होंने नगर निगम के अधिकारियों को निर्देश दिया कि खाली प्लाटो एवं पार्को में कूड़ा एकत्र न होने दें तथा लोगों को भी प्लाटो एवं पार्को में कूड़ा न फेकने के लिये जागरूक करें।

उन्होंने निर्देश दिया है कि महिला पुलिस की व्यवस्था हो। पर्याप्त संख्या में सी.सी.टीवी कैमरा की व्यवस्था करें। उन्होंने निर्देश दिया है कि नगर निगम सफाई की अच्छी व्यवस्था कराये। नगर निगम मेला क्षेत्र में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था करायें और पर्याप्त संख्या में अलाव जलवायें। उन्होंने निर्देश दिया कि गोरखपुर विकास प्राधिकरण तथा पी.डब्लू.डी., राष्ट्रीय राजमार्ग सड़कों को ठीक करायें। टेलीफोन विभाग मेला के दौरान टेलीफोन के अस्थायी कनेक्शन उपलब्ध करायें। बिजली विभाग मोहल्लों के जर्जर तारों एंव पोल ठीक करायें।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया है कि स्वास्थ्य विभाग मेला के दौरान कैम्प लगाये। उन्होंने रेलवे विभाग को निर्देश दिया है कि पूर्व की भांति स्पेशल ट्रेन चलवायें। आकाशवाणी एंव दूरदर्शन मेले का लाइव प्रसारण करेंगे। उन्होंने निर्देश दिया है कि मेले के दौरान परिवहन विभाग बसों की पर्याप्त संख्या में व्यवस्था करें।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया है कि शहर

के सभी रैन बसेरों को संचालित कराया जायें। कोई भी व्यक्ति खुले में न सोयें पुलिस और प्रशासन लगातार पेट्रोलिंग करें और यदि कोई व्यक्ति खुले में सोते मिले तो उसे रैन बसेरें में पहुंचाये। उन्होंने नगर आयुक्त को निर्देश दिया कि पटरी व्यवसायियो का व्यवस्थित पुर्नवास कराया जाये।बैठक में महापौर डा0 मंगलेश श्रीवा. स्तव, एडीजी अखिल कुमार मण्डलायुक्त अनिल ढींगरा, आईजी जे0 रविन्द्र गौड़, जिलाधिकारी कृष्णा करूणेश सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

प्रदेश में नई सरकार का शासन

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में भजनलाल शर्मा ने मुख्यमंत्री पद की शपथ गत दिनों ली। जयपुर के एलबर्ट हॉल के सामने हुए भव्य समारोह में राज्यपाल कलराज मिश्र ने प्रधनमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में भजनलाल शर्मा को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। श्री शर्मा के साथ ही विद्याधरनगर की विधायक दीया कुमारी और दूधू विधायक डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने सरकार में उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। शपथ ग्रहण समारोह में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय मंत्री नीतिन गडकरी सहित कई अन्य केन्द्रीय मंत्री और भाजपा शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री शामिल हुए। कार्यक्रम में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एक नाथ शिंदे , मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहनलाल, गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत उत्तरा खंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, और पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे भी उपस्थित रहे।

हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में विरासत दिवस समारोह मना

खेतड़ी। खेतड़ी कस्बे में मंगलवार शाम को रामकृष्ण मिशन की ओर से विरासत दिवस समारोह मनाया गया। समारोह को ऐतिहासिक बनाने के लिए रामकृष्ण मिशन के कार्यकर्ताओं की ओर ऐतिहासिक पन्ना शाह तालाब को भव्य रूप से सजाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नीमकाथाना कलेक्टर श्रुति भारद्वाज, विशिष्ट अतिथि स्वामी आत्मनिष्ठानंद महाराज, शिक्षाविद् अशोक सिंह शेखावत थे, जबकि अध्यक्षता पालिका अध्यक्ष गीता सैनी ने की।

कार्यक्रम में कलेक्टर श्रुति भारद्वाज ने कहा कि यह खेतड़ी का सौभाग्य है कि इस पावन धरा पर दो महान विभूतियों ने अपनी दोस्ती से पूरे विश्व में अलग पहचान बनाई थी। ऐसी महान विभूतियां इतिहास में बहुत कम देखने को मिली है, जिन्होंने अपने जीवन को उदाहरण के तौर पर देश के सामने पेश किया है। स्वामी जी का एक संन्यासी जीवन अनुशासन से भरपूर था और राष्ट्र को समर्पित था, जिससे भारतीय संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय ख्याति हासिल कर पाया।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुशासन व लगन होने का जज्बा होना चाहिए। युवाओं को इन महान विभूतियों से प्रेरणा लेकर जीवन की राह बदलने में सहायक होती हैं। खेतड़ी में बना अजीत विवेक संग्रहालय यहां आने वाले लोगों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा भी देता है। मिशन सचिव स्वामी आत्मनिष्ठानंद महाराज ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के खेतड़ी में आने के 125 वर्ष पूर्ण होने पर 13वां खेतड़ी विरासत दिवस समारोह धूमधाम से मनाया जा रहा है।

स्वामी विवेकानंद व देश को सनातन धर्म की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करने में खेतड़ी विरासत ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। नरेश अजीत सिंह के सहयोग से स्वामी विवेकानंद 1893 में शिकागो धर्म सम्मेलन में पहुंचे थे, जहां उन्होंने सनातन धर्म संस्कृति का परचम लहराते हुए देश को विश्व में विख्यात कर दिया था।

राजा अजीत सिंह व स्वामी विवेकानंद की गहरी मित्रता के चलते खेतड़ी को अलग पहचान मिल पाई थी। राजा अजीत सिंह के प्रतिमा के सामने से स्वामी विवेकानंद व राजा अजीत सिंह की सजीव झांकियां शुरू की गई, जो पूरे कस्बे से होते हुए ऐतिहासिक पन्ना शाह तालाब पर पहुंची, जहां पांच हजार दीपक जलाकर पन्ना शाह तालाब पर विरासत दिवस समारोह मनाया गया। इस मौके पर एसडीएम जय सिंह चौधरी, पार्षद लीलाधर सैनी, सुधीर गुप्ता, राजेंद्र यादव, महावीर प्रसाद, अमित सैनी, रमाकांत वर्मा, एसआई सुनील सैनी, विजेश कुमार, रविन्द्र सैनी, योगेश सोनी, प्रदीप झुंझुनूंवाला, तरुण सहित अनेक लोग मौजूद थे।

ताड़ी पेड़ विशेष जलवायु क्षेत्र में लगता

ताड़ी का मुख्य मौसम दिसंबर से मई तक होता है। फरवरी से मार्च तक आने वाली ताड़ी को वांझिया ताड़ी तथा अप्रैल से मई तक मिलने वाली को फलनियां ताड़ी कहा जाता है। इसके अलावा अन्य महीनों में भी ताड़ी आती है, लेकिन उसमें वह बात नहीं होती। जून से अगस्त तक स्वाद व सेहत के लिए वांझिया ताड़ी को सबसे अच्छा माना जाता है।यह पेड़ ताड़ी या नीरा को हमें ग्लूकोज के रूप में देता हैद्य जो काफी स्वादिष्ट एवं मीठा होता है द्यलेकिन सूर्य की किरणों से इसका किण्वन होने लगता है और यह अल्कोहल में बदल जाता है।जि. समे अल्कोहल की मात्रा बहुत ही कम होती है द्य आजकल विभिन्न रसायनों से नकली ताड़ी बनाने का चलन बढ़ गया है।सूर्य उदय के पूर्व उतारी हुई ताड़ी में आहार को पूर्ण पोषण करने वाले तत्व होते है।

ताड़ी रस आलीराजपुर, झाबुआ और धार जिले के गॉवों में बहुत होता है द्य जिसके पास ताड़ी के पेड़ होते है उसकी आर्थिक स्थिति का आंकलन मजबूत माना जाता है द्य वैसे सिन्धा ताड़ी भी होती है द्य जो खजूर के पेड पर उतरती है द्य जिसमे फल लगते है जो गर्मी के दिनों आते है द्य उन फलों को सिंधोला बोलते है द्य ये बाजारों में ढेरी या वाटा लगाकर बेच जाते है द्यताड़ी प्राप्त करने हेतु ताड़ी के पेड़ चढ़ने में जो अनुभवी होते वे ही इस पेड़ पर चढ़ पाते थे कई लोग पेड़ से गिर कर मृत्यु या घ ायल होते थे किन्तु आधुनिक तरीके से चढ़ने के लिए कई उपाय काम में अब लिए जाते है द्यमेहमानो का स्वागत ताड़ी पिलाने और ताड़ी भेंट करने ये तरीका क्षेत्र में काफी चलन में है द्यग्रामीण क्षेत्रो में पौष्टिक ताड़ी सड़कों के किनारे सस्ती दरों पर आसानी से मिल जाती है द्य ये ताड़ी बेचने वाले ताड़ी के शौकीन लोगो को चखा कर देते हैद्य विशेष जलवायु के क्षेत्र में ही इसके पेड़ होते है द्यहर जगह पर नहीं होते द्यज्यादा समय की ताड़ी खराब हो जाती और नुकसान देती है द्यसुबह की ताजी ताड़ी नीरा सेहत के लिए लाभकारी होती है द्यजैसे जैसे सूर्य का ताप चढ़ता वैसे वैसे ताड़ी में नशे का हल्का प्रभाव पैदा हो जाता है।कुछ भी हो नशे की प्रवृत्ति से दूर रहा जाए यही जीवन के लिए श्रेष्ठ है।

संजय वर्मा " दृष्टि "

भूख के खिलाफ महायुद्ध में जन–जन की सहभागिता अत्यन्तः आवश्यक

पूरा विश्व जलवायु संकट के दुष्प्रभावों से ग्रस्त है, इससे अनेक चुनौतियां उत्पन्न हो गई हैं। मानव जीवन की र क्षा के लिए इन चुनौतियों से निबटने में वैश्विक स्तर पर एकजुट प्रयास की आवश्यकता है। एक बड़ा संकट भूख से बचाने की है। यदि समय रहते इस दिशा में कदम नहीं उठाये गये तो भु खमरी का महासंकट उत्पन्न हो जायगा। वर्ष 2050 तक दस अरब लोगों को पोषण की जरूरत होगी। विश्व के कुछ हिस्सों में प्रोटीन की खपत अधिक है। अन्य क्षेत्रों में पर्याप्त प्रोटीन भी नहीं मिलता है। कुछ क्षेत्र कम रासायनिक उर्वरक का उपयोग करने से अवश्य लाभान्वित हो सकते हैं लेकिन अन्य क्षेत्र पर्याप्त उपयोग नहीं कर रहे हैं। इससे असन्तुलन की स्थिति बनी हुई है। भूख से सम्बन्धित भविष्य की आशंकाओं से संयुक्त राष्ट्र भी चिन्तित है। राहतकारी बात यह है

कि संयुक्त राष्ट्र ने पहली बार भूख से बचाने के लिए सार्थक पहल की है और एक रोडमैप बनाने की दिशामें वह सक्रिय हुआ है। संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि आगामी दो से तीन वर्षों में यह रोडमैप तैयार हो जायगा। इसके लिए दस प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को रे खांकित किया गया हैं। इन लक्ष्यों को प्राप्त करनेके लिए धन की आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए एक कोष बनाने पर विचार किया गया है।

रोडमैपके अनुसार, 2030 तक मांस उत्पादन से मीथेन उत्सर्जन में 25 प्रतिशत की कटौती, मछली पालन का स्थायी प्रबन्ध करना, सभी के लिए पीने योग्य जल उपलब्ध कराना लक्ष्य में शामिल है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संघटन (एफएओ) का कहना है कि वह खाद्य उत्पादन जलवायु संकटके प्रभावोंके प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। भूख को कम करने और तापमानको 1.5 डिग्री सेल्सियस के अन्दर रखने की आवश्यकता है।

एक सबसे बड़ा प्रश्न भोजन की बर्बादी से सम्बन्धित है। इस पर अंकुश लगाने की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र आगामी कुछ वर्षों में भोजन की बर्बादी को आधा करने के लिए संकल्पित है। यह महत्वपूर्ण मिशन है और इसके लिए वैश्विक स्तर पर जनान्दोलन चलाने की जरूरत है।

भारत में भी काफी मात्रा में भोजनकी बर्बादी होती है। भण्डारण ठीक नहीं होने के कारण अन्न खराब हो जाता हैं। इसकी रोकथाम के साथ ही पूरे विश्व में वनों की कटाई को भी रोकना होगा।

कृषि के लिए अधिक धन निवेश करने की जरूरत है। भूख के खिलाफ महायुद्धमें जन–जनकी सहभागिता अत्यन्तः आवश्यक है तभी इसमें सफलता मिलेगी।

मौसी होगई विलीन

जब तक जीवित थी
मोबाइल पर अपनों के
कैसे हो से हाल चाल
पूछा करती उसे अकेलापन महसूस नही होता
अपनों से बात करके नजदीकी का अहसास कर लेती
वो पढ़ी लिखी थी इसलिए
लॉकडाउन की परिभाषा
समझती थी।
सबकी सुखद कामना
आशीर्वाद के संग हमेशा करती
मौसी आरती में रखे
कपूर की तरह मायने रखती
जिसके बिना आरती अधूरी
आरती की पंक्तियां अधूरी
मौसी का हँसता चेहरा
सदा मन मस्तिष्क पर रहते हुए
हर पल याद आता मौसी दरवाजे पर
खड़ी होकर अपनों की राह निहारती
अब चौखट सूनी सी
जिस पर ताला लगा
ये बताता मौसी के पास
ही चाभी थी जिससे वो
मुझ जैसे ताले पर विश्वास रखती की
घर में सुरक्षित है।
संक्रमण काल मे जीवन को निगलने वाला
वायरस मौसी को निगल गया
सारी शक्तियां,आस्था,विश्वास,रिश्तें
अशक्त हो गए इन पर विश्वास था
वो भी बेजान हो गए यादों का पिटारा हर एक के मस्तिष्क में
घुमड़ रहा दुख के बादल की तरह
और संवेदना के आँसू आँखों से गिर रहा हर पल
मौसी की शक़्ल अब सपनों में आती
सपनों से मन मे सुकून पा लेता हूँ
मौसी नही होने पर रिश्तें रोते तो है
नींद आँखों की उड़ा ले जाते
मोबाइल की रिंगटोन भी अब चौंकाने लगती लगता जैसे मौसी का
आया है फोन मौसी के नही होने पर
मौसी की याद तीज त्योहारों पर आती
किंतु मेरे जन्मदिन पर मिठाई
फीकी हो जाती है।
मौसी जहाँ का बोलकर जाती थी
वो जगह अब बहुत याद आती

संजय वर्मा "दृष्टि"

ऐ वीर जवान

ऐ सैनिक ! फौज़ी,जवान, है तेरा नितअभिनंदन।
अमन–चैन का तू पैगम्बर,तेरा है अभिवंदन।।
गर्मी,जाड़े,बारिश में भी,तू सच्चा सेनानी
अपनी माटी की रक्षा को,तेरी अमर जवानी
तेरी देशभक्ति लखकर के,माथे तेरे चंदन।
अमन–चैन का तू पैगम्बर,तेरा है अभिवंदन।।
आँधी–तूफाँ खाते हैं भय,हरदम माथ झुकाते
रिपु तो तुझको देख सिहरता,घुसपैठी थर्राते
सीमाओं के प्रहरी तू तो,वीर शिवा का नंदन।
अमन–चैन का तू पैगम्बर,तेरा है अभिवंदन।।
तू सीमा पर डँटा हुआ पर,हम त्यौहार मनाते
तू जगता,मौसम से लड़ता,हम नींदों में जाते
तेरे कारण खुशहाली है,किंचित भी ना क्रंदन ।
अमन–चैन का तू पैगम्बर,तेरा है अभिवंदन।।
मात–पिता,बहना–भाई सब,तेरे भी हैं नाते
तू पति है,तो पुत्र भी चोखा,तुझको सभी सुहाते
पर अपने इस मुल्क़ की ख़ातिर,छोड़े तू सब बंधन।
अमन–चैन का तू पैगम्बर,तेरा है अभिवंदन।
तुझसा कोई और न दूजा,त्याग तिरा यशगानी
केवल इस माटी के नामे,तूने की ज़िंदगानी
बोले नित जयहिंद का नारा,तेरा पावन तन–मन।
अमन–चैन का तू पैगम्बर,तेरा है अभिवंदन।।
लोकतंत्र है तुझसे रक्षित,सेवा में तू हर पल
लिये समर्पण,त्याग औ' निष्ठा,तू गंगा की कल–कल
परमवीर तू,महाबली भी,गाता है जन–गण–मन ।
अमन–चैन का तू पैगम्बर,तेरा है अभिवंदन।।

प्रो.(डॉ.)शरद नारायण खरे

गिरोदपुरी सुघघर धाम बने हैं

सत्यनाम के धरम धजा फहराइस है
जग मे अमरौतीन के भाग जगाइस है
अइसे संत ह सत के नाम जगावत है
मानवता के दर्शन जग ला करावत है
मानव ला मानव संग़ एका करावा के
छुआछुत के भेद जगत के मेटवा के
इंसानियत के भावना ला जगावत है
मानवता के दर्शन जग ला करावत है
सत के झंडा अउ सत के पताका ला
सादा जीवन अउ सत के महिमा ला
जेहा चारोमुड़ा ननपन ले बगरावत है
मानवता के दर्शन जग ला करावत है
दाई–ददा के जेहर नाम जगाइस है
मानवता के जेहर भेद ल बताइस है
अपन करम ले गुरुबाबा कहाइस है
मानवता के दर्शन जग ला करावत है
गिरोदपुरी जेकर सुघघर धाम बने है
जेकर मिनार जगत मा सबले बढ़े है
जेहा घासीदास के महिमा बतावत है
मानवता के दर्शन जग ला करावत है

प्रमेशदीप मानिकपुरी
आमाचानी धमतरी छ ग

राजनीति में सबकुछ अस्थिर, बदलाव की ओर लौटता लोकतंत्र..!

अब जबकि मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री बदल चुके है तो वहां के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की बड़ी तारीफ की जा रही है। थोड़ी हंसी भी आई, मु ख्यमंत्री के तौर पर तीन कार्यकाल पूरे कर चुके शिवराज को त्याग की मूर्ति साबित किया जा रहा है। सवाल तो यह उठता है कि क्या वो वाकई त्याग कर रहे हैं या फिर इसके सिवा उनके पास कोई चारा है ही नहीं! चलिए इस सवाल को अधूरा छोड़ते हुए पिछली सदी के आखिरी दशक में उत्तर प्रदेश की सियासत की ओर चलते हैं। बाबरी विध्वंस के बाद भारतीय जनता पार्टी की कमंडल की राजनीति पूरे उफान पर थी। राम मंदिर आंदोलन से देश भर में ऐसा जन समर्थन बढ़ा कि संसद में दो सांसदों वाली पार्टी के 89 सांसद हो चुके थे। यूपी में कल्याण सिंह के नेतृत्व में सरकार बन चुकी थी। दूसरी बार जब सरकार बनी तो पार्टी में चार धड़े बन गए। कल्याण सिंह, कलराज मिश्र, राजनाथ सिंह और लाल जी टंडन। उनके अलावा ओमप्रकाश सिंह और हुकुम सिंह आदि नेताओं का भी वर्चस्व था लेकिन पार्टी की इस भीतर लड़ाई में वह पीछे रहे। एक दूसरे के खिलाफ अफवाहें उड़वाना। सही खबरें लीक करवाना और दिल्ली के नेताओं तक कानाफूसी करते रहना। यहां तक कि विपक्ष के नेताओं का भी आपसी लड़ाई में इस्तेमाल किया गया। उस वक्त पार्टी के छोटे कार्यकर्ता से लेकर बड़े नेताओं तक हर कोई किसी न किसी का आदमी था। अटल, आडवाणी और जोशी के नाम की झंडाबरदारी भी चलती रहती थी। उस वक्त पार्टी में शीर्ष नेतृत्व का डर पार्टी कैडर में नहीं था। हालत आज की कांग्रेस जैसी थी। सब अपनी अपनी महत्वकांक्षा में एक दूसरे को नीचे गिराने के लिए पार्टी को पीछे लेते चले गए। संघ के संगठन मंत्रियों ने भी इन चीजों से उस वक्त आंखें मूंदी हुई थीं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह थी कि पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का किसी को डर नहीं था। यूपी की बात इसलिए कि पत्रकारिता के दौरान मुझे यह सब दिखायी पड़ रहा था और मैं रिपोर्ट कर रहा था। पार्टी यूपी की सत्ता से ऐसी बाहर हुई कि फिर पंद्रह बरस तक वापस नहीं आई। अन्य राज्यों में भी मिलते जुलते हालात रहे होंगे। इसका असर केन्द्र की सत्ता पर भी बड़ा। अब 2014 के बाद पार्टी की सियासत को देखिए। फर्क यह है कि अब एक पावरफुल केन्द्रीय नेतृत्व है। इसमें मोदी और अमित शाह की जोड़ी है। ऐसा ही ताकतवर नेतृत्व स्व इंदिरा गांधी का था। न ही देश और न ही अन्य राज्यों में अब नब्बे की दशक वाली बीजेपी की छवि नजर आती है। राजनीतिक चिंतक और दार्शनिक मैकियावली ने द प्रिंस में कहा है राजकुमार या राजा या सत्ता केन्द्र ऐसा हो जिसे लोग प्यार करें और जो नहीं करते हैं, वह डरें। बड़े लक्ष्य के लिए रास्ता क्या है और साधन कैसे हैं, यह मायने नहीं रखते। तो अब आप इस नजरिए से शिवराज जी के त्याग के असली कारण को समझिए। पावरफुल सेंटर के अपने नुकसान और अपने फायदे हैं। पर भारत जैसे देश लोकतंत्र में जो वक्त के साथ साथ भीड़तंत्र में तब्दील होता गया, एक शक्तिशाली नेतृत्व की जरूरत यह देश ही महसूस कर रहा था। 2010 में जयपुर के एक अखबार के संपादक से बातचीत हो रही थी। उनका कहना था कि देश तो तभी सुधरेगा जब मोदी प्रधानमंत्री बनेंगे। किसी दिन फिर बात करूंगा कि अब देश और भविष्य के लिए उनका क्या कहना है। बहरहाल मूल बात यह है कि सत्ता केन्द्र के लिए पब्लिक और पार्टी का प्यार जरूरी है और जो प्यार नहीं करते उन्हें डरना चाहिए। फिलहाल प्यार और डर का नतीजा साफ दिख रहा है। पार्टी का आंतरिक लोकतंत्र भी इससे प्रभावित होता ही है।

मध्य प्रदेश में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत हासिल की, पार्टी गदगद, शिवराज सिंह चौहान का डूबता हुआ सूरज फिर चमक मार उग गया। आंकड़े और अनुमान दोनों को धता बता कर एमपी चुनाव में इस बार भाजपा से अकेले लगभग 30 ब्राह्मण चेहरे विधायक चुन कर विधानसभा पहुँच गए। यह आकड़ा गर्व कराता है किन्तु वहीं भाजपा सरकार में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के टीम में गृहमंत्री से मुख्यमंत्री बनने का दंभ भरने वाले नरोत्तम मिश्रा को दतिया से हार का सामना करना पड़ा। दतिया ब्राह्मण बाहुल्य इलाका था और इनके प्रचार में योगी सरकार से आयुष और खाद्य राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार डॉ दयाशंकर मिश्र दयालु जैसे लोकप्रिय चेहरे लगाए गए थे किन्तु इस प्रचंड जीत की आंधी में भी नरोत्तम मिश्रा हार गए। जब आंकलन किया जायेगा और वजह ढूंढी जाएंगी तो सबसे बड़ी वजह जो पता चलेगी, जिसे ग्राउंड जीरो से प्रचार के दौरान महसूस किया गया और बतौर पत्रकार मैंने भी हाल खबर लेने का प्रयास किया तो पता चला की मंत्री रहते नरोत्तम जी जनता से दुरी बना चुके थे, वी. आईपी कल्चर, घटिया ओएसडी मैंनेजमेंट, कार्यकर्ताओं से सीधे फोन संपर्क ना करना, पर्सनल सेक्रेटरी की लापरवाही और कार्यकताओ की समस्या को दबा देना इत्यादि कई कारण निकलेंगे। मध्य प्रदेश में बेहद लोकप्रिय और दबंग नेता माने जाते है नरोत्तम मिश्रा जिन्हे अपनी विधायकी गवानी पड़ी और वो कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार से हार गए ! अपनी हार स्वीकार करने के बाद उन्होने अपने पद से इस्तफा दे दिया जबकि उनकी पार्टी भाजपा ने भारी जीत हासिल की थी। अपनी विवादास्पद टिप्पणियों के लिए जाने जाने वाले मिश्रा दतिया में राजेंद्र भारती से 7,156 वोटों से हार गए थे। इस सीट से वह 2008 से लगातार जीतते आ रहे थे। अब उनके हार के कारणों की विस्तृत समीक्षा की जरुरत होंगी पर यह हार अब योगी सरकार में भी कई ब्राह्मण मंत्रियो के लिए भी खतरे की घंटी होंगी जो अपने बेसिक और सोशल मिडिया कार्यकर्ताओं की अनदेखी करते है।

पंकज कुमार मिश्रा,
जौनपुर यूपी

महान देश

हरी भरी वसुंधरा सदा हरा मचान है।
सुनील आसमान है नया–नया वितान है।।
नगाधिराज है यहाँ बड़ा अभेद्य वेश में।
पयोधि पांव धो रहा सदा महान देश में।।
पठार भूमि है कहीं कहीं कछार है धरा।
उपत्यका यहाँ कहीं कहीं धरा हरा भरा।।
घने कहीं कहीं अगम्य वन्य हैं बड़े यहाँ।
सदा हरा वितान और वन्य कंटिला जहाँ।।
विरान थार है यहाँ कहीं कहीं पहाड़ है।
विभिन्न जीव हैं जहाँ कहीं कहीं दहाड़ है।।
कहीं सुरम्य घाटियाँ कहीं कहीं अगम्यता।
यही महान देश है भरी सदा सुरम्यता।।
नयी बयार है अभी नयी नयी उमंग है।
नवीनता लिये हुये अभी नयी तरंग है।।
नयी सवेर है उठो सदा बढे चलो अभी।
नवीन पंथ पे सदा चलो बढो अभी सभी।।
स्वदेश के सिपाहियों अदम्य हो सदा सभी।
प्रवीर शूर साहसी बढ़े चलो सभी अभी।।
महान देशभक्तिपूर्ण भावना सदा रहे।
सदा स्वदेश के लिये यहाँ सुपंथ ही गहे।।
सभी सदा सचेत वीर साहसी रहो यहाँ ।
सुशील सौम्य सारथी सुसत्य ही कहो जहाँ।।
सुभारती सदा हमें सुमार्ग ले चलें सभी।
सभी कुमार्ग कंटकों भरी बला टलें अभी।।

डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन'
प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश

जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35–ए हटने की बहस पर पूर्ण विराम लगना देशहित में

भारत की संप्रभुता और जम्मू–कश्मीर प्रान्त के लिए 11 दिसंबर 2023 एक ऐतिहासिक दिन बनकर आया। इस दिन उच्चतम न्यायालय की पांच जजों की संविधान पीठ ने जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35 ए को हटाने के निर्णय को वैध ठहराते हुए कहा कि यह एक अस्थाई धारा थी जिसे आज नहीं तो कल हटना ही था। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि अनुच्छेद 370 एक अस्थायी व्यवस्था थी। अदालत ने कहा कि भारत का संविधान जम्मू–कश्मीर के संविधान से ऊंचा है और अनुच्छेद–370 को बेअसर करने से जम्मू–कश्मीर को भारत के साथ जोड़ने की प्रक्रिया मजबूत हुई है। न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने कहा कि धारा 370 को हटाना संवैधानिक रूप से वैध है और केंद्र सरकार का निर्णय बिल्कुल सही है।

उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय में कई महत्वपूर्ण व ऐतिहासक टिप्पणियां की हैं जिनमे कहा गया है कि विलय पत्र पर हस्ताक्षर होने के बाद जम्मू–कश्मीर के पास संप्रभुता का कोई तत्व नहीं है। जम्मू–कश्मीर के लिए कोई आंतरिक संप्रभुता नहीं है। राष्ट्रपति की शक्ति का प्रयोग राष्ट्रपति के शासन के उद्देश्य के साथ उचित संबंध होना चाहिए। न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया है कि जब संविधान सभा भंग कर दी गई तो सभा की केवल अस्थायी शक्ति समाप्त हो गई और राष्ट्रपति के आदेश पर कोई प्रतिबंध नहीं रहा। राष्ट्रपति द्वारा सत्ता का उपयोग दुर्भावनापूर्ण नहीं था और राज्य के साथ किसी सहमति की आवश्यकता नहीं थी। राष्ट्रपति द्वारा सत्ता का निरंतर प्रयोग दर्शाता है कि एकीकरण की प्रक्रिया जारी थी और इस प्रकार से सीओ 273 अवैध है। जम्मू–कश्मीर का संविधान क्रियाशील है और इसे निरर्थक घोषित कर दिया गया है। मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने कहा कि जम्मू–कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल किया जायेगा और हम लद्दाख को अलग करने के फैसले को बरकरार रखते हैं। उच्चतम न्यायालय ने अंत में कहा कि हम चुनाव आयोग को निर्देश करते हैं कि पुनर्गठन अधिनियम और राज्य के दर्ज 14 की धारा के अंतर्गत 30 सितंबर 2024 तक चुनाव कराये जायें।

न्यायालय ने एक यह व्यवस्था भी दी है कि राज्य में 1980 के बाद हुई सभी प्रकार की आतंकवादी /पलायन की घटनाओं की जांच के लिए एक कमेटी बनायी जाये जो एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात और कश्मीरी पंडितों के लिए न्याय प्राप्ति का मार्ग खोलती है। इस व्यवस्था के आने के बाद 1980 के बाद घाटी में कश्मीरी पंडितों के साथ जो वारदातें हुई हैं उनकी जांच अब की जा सकेगी। उच्चतम न्यायालय की इस बेंच की अध्यक्षता मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ कर रहे थे तथा बेंच में जस्टिस संजय किशन कौल, जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस सूर्यकांत शामिल थे।

जस्टिस कौल की ऐतिहासिक टिप्पणी

जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 370 पर अपने फैसले में जस्टिस संजय किशन कौल ने कश्मीरी पंडितों के पलायन का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्हाने 1980 से राज्य में हुए मानवाधिकारों के उल्लंघन की जांच के लिए एक सत्य और सुलह आयोग बनाने का सुझाव दिया है। उन्होंने कहा कि यह आयोग आपराधिक जांच आयोग की तरह काम नहीं करेगा। जस्टिस कौल का मानना है कि आतंक के चलते राज्य की महिलाओं, बच्चों और पुरुषों ने बहुत कुछ झेला है। इसे भुलाकर आगे बढ़ने के लिए जख्मों को ठीक करने की जरूरत है। राज्य एवं राज्य से बाहर के तत्वों के द्वारा यहां के लोगों के विरुद्ध किये गये मानवाधिकारों के हनन की सामूहिक समझ विकसित करना ही मरहम लगाने की दिशा में पहला निष्पक्ष प्रयास होगा। आयोग के सहारे काफी हद तक उनकी क्षतिपूर्ति की जा सकती है।

गौरतलब है कि 5 अगस्त 2019 को गृहमंत्री अमित शाह द्वारा प्रस्तुत अनुच्छेद 370 व 35 ए को हटाने से सम्बंधित विधेयक संसद के दोनों सदनों से पारित हो जाने के बाद जम्मू–कश्मीर राज्य के परिवारवादी नेता फारुख अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती जैसे लोग व कई अन्य संगठन इसके विरुद्ध उच्चतम न्यायालय पहुंच गये थे। उन सभी की याचिकाओं पर अगस्त से सितंबर माह के बीच 16 दिन चली सुनवाई के बाद यह ऐतिहासिक निर्णय आया है जिस पर पर सभी देशवासियों और राजनैतिक दलों सहित अलगाववादी नेताओं और पाकिस्तान की भी दृष्टि थी।

मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ वाली खंडपीठ के फैसले के बाद पाक परस्त अलगाववादी नेताओं व कांग्रेस सहित संपूर्ण विपक्ष के पैरों तले जमीन खिसक गयी है। उच्चतम न्यायालय द्वारा अनुच्छेद–370 व 35–ए को हटाने का निर्णय वैध बताये जाने के बाद जहाँ एक और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के निर्णय को अब संवैधानिक मान्यता मिल गयी है वहीं दूसरी और कांग्रेस सहित उस संपूर्ण विपक्ष की राजनीति को बहुत गहरा आघात लगा है जो राष्ट्रीय संप्रभुता के इस विषय को भी तुष्टिकरण की राजनीति के चश्मे से देख रही थी।

अनुच्छेद 370 पर विपक्षी नेता और अलगाववादी जो अनर्गल प्रश्न उठा रहे रहे थे उन सभी प्रश्नों का उत्तर उच्चतम न्यायालय ने दे दिया है और यह भी स्पष्ट कर दिया है कि अब धारा 370 पर पूर्ण विराम लग चुका है। उच्चतम न्यायालय का निर्णय आने के बाद अब जम्मू–कश्मीर देश के अन्य राज्यों की तरह समान व्यवस्था वाला राज्य बन गया है। उच्चतम फैसला आ जाने के बाद जम्मू–कश्मीर के गुपकार गठबंधन के नेताओं व अलगावादियों के होश उड़ गये हैं। जम्मू–कश्मीर में गुपकार गठबंधन के सभी नेता जिस प्रकार अदालत के निर्णय को मानने से इंकार करते हुए जिस प्रकार एक लंबे संघर्ष की बात कर रहे हैं वह एक चिंतनीय विषय है। उच्चतम न्यायालय के निर्णय पर पाकिस्तान से भी प्रतिक्रिया सामने आ गयी है और वहां पर खलबली मची है।

उच्चतम न्यायालय का निर्णय आने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने सोशल मीडिया एकाउंट्स पर लिखा कि अनुच्छेद–370 को निरस्त करने का निर्णय ऐतिहासिक है। यह जम्मू–कश्मीर और लद्दाख में हमारी बहनों और भाईयों के लिए आशा, प्रगति और एकता की एक शानदार घोषणा है। न्यायालय ने अपने गहन ज्ञान से एकता के मूल सार को मजबूत किया है। जिसे हम भारतीय होने के नाते बाकी सबसे प्रिय मानते हैं और संजोते हैं। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह सहित कई भाजपा नेताओं ने न्यायालय के फैसले का स्वागत किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी निर्णय का स्वागत करते हुए कहा है कि यह निर्णय राष्ट्रीय एकता को मजबूत करेगा। अनुच्छेद–370 के कारण जम्मू–कश्मीर में वर्षों से अन्याय सह रहे लोगों को इस निर्णय से मुक्ति मिली है।

राज्य में विकास का नया सूर्योदय

अनुच्छेद–370 के रद्द किये जाने के बाद से ही जम्मू–कश्मीर में विकास की राह खुली है पर अब उच्चतम न्यायालय का निर्णय आ जाने के बाद वहां विकास का नया सूर्योदय होने जा रहा है। वर्ष 2024 में कश्मीर घाटी तक ट्रेन पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। जम्मू–कश्मीर में सड़कों, पुलों एवं सुरंगो के निर्माण से तस्वीर बदल रही है। माता वैष्णो देवी के दर्शन के लिए हर साल पहुंचने वाले एक करोड़ श्रद्धालुओं के लिए दिल्ली–अमृतसर–कटरा एक्सप्रेस–वे को मंजूरी दी है। जम्मू–कश्मीर राज्य भी तीव्र गति से डिजिटल हो रहा है और कई योजनाएं व सेवाएं ई–मोड पर उपलब्ध हो चुकी हैं। पर्यटन उद्योग को विकास के नये पंख लग रहे हैं जिसके अंतर्गत जनवरी–2022 से 31 दिसंबर 2022 तक राज्य में एक करोड़ 88 लाख 84 हजार 317 रिकार्ड पर्यटक आये। श्रीनगर की डल झील की रौनक वापस आ गयी है और फिल्मों की शूटिंग भी एक बार फिर प्रारंभ हो चुकी है। राज्य में औद्योगिक गतिविधियां की अब चल पढ़ी हैं जिसके कारण बेरोजगारी की समस्या में भी कमी आ रही है। कुछ माह पूर्व हुई जी20 की बैठक के माध्यम से पूरे विश्व ने एक नया कश्मीर देखा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व गृहमंत्री अमित शाह की सधी हुई और ठोस रणनीति के कारण अब राज्य में आतंकवाद और अलगाववाद धीरे–धीरे समाप्ति की ओर अग्रसर है। राज्य में पत्थरबाजी की घटनाएं लगभग समाप्त हो चुकी हैं। कश्मीर में 2010 में पत्थरबाजी से 112 लोगों की मौत हुई थी जबकि 2023 में पत्थरबाजी से एक भी मौत नहीं हुई। अब यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई है कि अनुच्छेद–370 के कारण ही राज्य में अलगाववाद का जहर पनप रहा था वह मूल अब समाप्त हो चुका है किंतु राज्य की सुरक्षा के लिए वहां की जनसांख्यिकीय को भारत के प क्ष में करना ही होगा। अनुच्छेद–370 के समापन के बाद राज्य में विकास का नया सूर्योदय होने जा रहा है जिसमें समाज के सभी वर्गों को न्याय मिलेगा।

साभार–मृत्युंजय दीक्षित

विकसित भारत के सपने

हमने कई मौकों पर अपने सपने को टूटते हुए देखा है लेकिन फिर भी हम हर मुसीबत की स्थिति से मजबूत और आत्मविश्वास से भरे हुए हैं। स्वराज के महत्व को समझना चाहिए और इन सपनों को आगे बढ़ाने के लिए आक्रामक रूप से शुरुआत करनी चाहिए ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को भी बेहतर भविष्य प्रदान कर सकें। धर्म के नाम पर कही गई बातों पर आंख मूंदकर विश्वास न करने, विवेक का पालन करने के लिए जागरूकता फैलानी चाहिए। हम इस सपने तक पहुँचने से बहुत दूर हैं लेकिन हमें हार नहीं माननी चाहिए। मैं डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के बेहतरीन उद्धरणों पर सम. ाप्त करना चाहता हूं "सपने वह नहीं हैं जो आप नींद में देखते हैं, बल्कि वह हैं जो आपको सोने नहीं देते"।

"आधी रात को, जब दुनिया सोती है, भारत जीवन और स्वतंत्रता के लिए जागेगा"। जवाहरलाल नेहरू का यह "ट्रिस्ट विद डेस्टिनी" भाषण उस सपने का प्रतीक था जिसे हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने पूरा किया था। इसने हमें, भारत के लोगों द्वारा पालन किए जाने वाले अगले सपने का विजन भी दिया।

भारत के बारे में गांधी का दृष्टिकोण हमारे देश के आत्मनिर्भर विकास के लिए घरेलू औद्योगीकरण को बढ़ावा देना था। उनका विचार था कि ग्रामीण भारत भारत के विकास की रीढ़ है। यदि भारत को विकास करना है, तो ग्रामीण क्षेत्र का भी समान विकास होना चाहिए। वह यह भी चाहते थे कि भारत गरीबी, बेरोजगारी, जाति, रंग पंथ, धर्म के आधार पर भेदभाव जैसी सभी सामाजिक बुराइयों से मुक्त हो, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से निचली जातियों (दलितों) के खिलाफ अस्पृश्यता को समाप्त करे जिन्हें वह 'हरिजन' कहते हैं।

ये दर्शन भारत के तत्कालीन समाज के सामाजिक स्तर को दर्शाते हैं। स्वतंत्रता के 75 वर्षों के बाद भी हम अभी भी इन सामाजिक मुद्दों को भारत में कायम पाते हैं। हमारे संविधान की प्रस्तावना भारत को संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और गणतंत्र देश के रूप में निर्दिष्ट करती है। आइए देखें कि इस परिभाषा को सच करने के लिए हमने भारत के नागरिक के रूप में अपने सपने को कैसे पूरा किया है। 100 वर्षों के स्वतंत्रता संग्राम के बाद हम इस सपने को साकार करने में सक्षम हुए हैं। शीत युद्ध के दौर में भी जब दो महाशक्तियां अमेरिका और सोवियत संघ एक–दूसरे का मुकाबला करने के लिए गठबंधन बना रहे थे, हमने अपनी संप्रभुता को बनाए रखने के लिए किसी भी गठबंधन में शामिल नहीं होने के लिए गुटनिरपेक्षता का विकल्प चुना। यद्यपि संयुक्त राष्ट्र द्वारा उपनिवेशवाद पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, लेकिन नव–उपनिवेशीकरण के समान अंतरराष्ट्रीय दुनिया में अपनी जड़ें जमा रहा है।

नव उपनिवेशीकरण को अन्य राज्यों द्वारा राज्यों की नीतियों पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण के रूप में परिभाषित किया गया है। हाल ही में हमने भारत और अन्य अविकसित देशों जैसे अमेरिका द्वारा संयुक्त राष्ट्र में आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) बीजों को पेश करने और विकसित देशों से कृषि आयात के लिए बाजार को उदार बनाने के लिए दबाव देखा है। जीएम बीज कृषि का निजीकरण करते हैं और इस प्रकार मिट्टी की गुणवत्ता के साथ–साथ भारत के किसानों की सामाजिक स्थिति के लिए बहुत बड़ा खतरा पैदा करते हैं। भारतीय मिट्टी के अनुकूल बीजों के विकास में अनुसंधान पर अमेरिका द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत को लगातार निशाना बनाया गया है।

भारत की संप्रभुता के लिए खतरे का अन्य उदाहरण वैश्विक आतंकवाद के माध्यम से है। भारत 26/11 और पठानकोट में उग्रवादियों द्वारा किए गए हमले का गवाह रहा है। बोडोलैंड की मांग के लिए असम अलगाववादी आंदोलन से भारत नक्सलियों और पूर्वोत्तर में उग्रवादियों से उग्रवादी गतिविधियों का भी सामना करता है। इन गतिविधियों से निर्दोष जीवन की हानि होती है और सरकारी संपत्तियों को नुकसान पहुंचता है जिससे देश के विकास में बाधा उत्पन्न होती है। इस सपने को जिंदा रखने के लिए हमें इन गतिविधियों के ि खलाफ एकता दिखानी होगी। इंटरनेट पर एकाधिकार करने के लिए फेसबुक के खिलाफ भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के फैसले का उदाहरण भारत के लोगों द्वारा मजबूत सर्वसम्मत अस्वीकृति के कारण था।

हमारे पहले प्रधान मंत्री देश की योजना और विकास में सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका के विचार के थे। उद्योगों का उदारीकरण 1991 के बाद ही हुआ, लाइसेंस राज खत्म हुआ। हाल ही में हमने भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के माध्यम से धन का प्रवाह देखा। अगर हम करीब से देखें तो हमने भारत के अधिकतम क्षेत्रों में 100þ एफडीआई नहीं खोला है। बाजार का निजीकरण निस्संदेह गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के साथ समाज में सर्वश्रेष्ठ प्रतिस्पर्धा प्रदान करता है। लेकिन अगर हम इसे अपनाते हैं, तो बाजार में केवल उन्हीं उत्पादों की आपूर्ति होगी जिनकी मांग है और जिससे वे अन्य आवश्यक आपूर्तियों की उपेक्षा करते हुए लाभ कमा सकते हैं।

साथ ही समाजवादी समाज का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक के लिए समान परिणाम प्राप्त करना, नौकरियों में समान अवसर प्रदान करना, न्यूनतम मजदूरी प्रदान करना और भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को प्रदान करना है। वर्तमान में भारत गरीबी, अस्वस्थता, बेरोजगारी, भेदभाव के कारण दुर्व्यवहार, खराब शिक्षा आदि के कारण जागरूकता की कमी आदि से पीड़ित वंचितों की सबसे बड़ी संख्या वाला देश है। इन सामाजिक मुद्दों पर अंकुश लगाने के लिए सक्रिय रूप से संगठनों का गठन करते हुए हमें भारत के नागरिक के रूप में सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों को ईमानदारी से लागू करने में सक्रिय होना चाहिए। भारत अनेकता में अपनी एकता पाता है। आजादी के बाद हुए साम्प्रदायिक दंगों के बाद भारत को यह बात समझ में आ गई कि किसी भी धर्म का प क्ष लेने से भारत को लंबे समय तक नुकसान उठाना पड़ता है। लेकिन आज भी हम समाज में धार्मिक घृणा पाते हैं। इतने सालों में हमने 1984 के सिख दंगों, 2002 के गोधरा कांड, 2013 के मुजफ्फरनगर दंगों, बाबरी मस्जिद के विध्वंस और कई अन्य के रूप में सांप्रदायिक दंगे देखे हैं। धार्मिक राजनीति ने भारतीय राजनीति में अपनी जड़ें जमा ली हैं। बीफ खाने पर हालिया प्रतिबंध और 'घर वापसी', 'लव जेहाद' आदि जैसे आंदोलन धर्मनिरपेक्षता के मूल मूल्यों के खिलाफ हैं। धर्म के नाम पर कही गई बातों पर आंख मूंदकर विश्वास न करने, विवेक का पालन करने के लिए जागरूकता फैलानी चाहिए। हम इस सपने तक पहुँचने से बहुत दूर हैं लेकिन हमें हार नहीं माननी चाहिए। समाज को इन धार्मिक संस्थाओं द्वारा लगाए गए अतार्किक कटौती का विरोध करना चाहिए।

इस संबंध में हम देख सकते हैं कि लोकतंत्र ने भारतीय समाज में अपनी जड़ें जमा ली हैं। संघों का सक्रिय गठन, चुनाव प्रक्रियाओं में भागीदारी में वृद्धि, विवादित परिदृश्यों का शांतिपूर्ण समाधान देश के दूर–दराज के हिस्सों में भी सक्रिय रूप से देखा जाता है।

असहिष्णुता को लेकर हाल के परिदृश्य ने एक बार फिर हमारे लोकतांत्रिक विश्वास की अटकलों को हवा दे दी है। हम लगातार ऐसी स्थिति देखते रहे हैं जहां हम पाते हैं कि लेखक के विचारों के लेखन के खिलाफ धर्म द्वारा फतवा जारी किया जाता है। फेसबुक पर पोस्ट के कारण लोगों को जेल में डाला जा रहा है। साथ ही हम अपने देश में जाति आधारित राजनीति, धर्म आधारित राजनीति देखते हैं। राष्ट्रीय दल लोकतंत्र का कुरूप चेहरा दिखाते हुए लगातार गंदी राजनीति कर रहे हैं।

लोकतंत्र वह शक्ति है जो लंबे ऐतिहासिक संघर्ष के बाद मिली है। हमें समाज की अज्ञानता को स्वतंत्रता के रूप में हमें मिले सर्वोत्तम उपहार को छीनने नहीं देना चाहिए। गणतंत्र भारत के नागरिक के रूप में हम अपने संविधान में सर्वोच्चता मानते हैं। 1976 के आपा. तकाल के समय हमारे संविधान को चुनौती का सामना करना पड़ा। प्राधिकरण द्वारा उनके व्यक्तिगत भविष्य के हित के लिए इसमें बड़े पैमाने पर संशोधन किया गया है। लेकिन जल्द ही सरकार ने देश के नागरिकों के कड़े विरोध को देखा और संविधान में निहित शक्ति को महसूस किया। इतने सालों के बाद हमने 105 बार संविधान में संशोधन किया है। प्राधिकारियों में निहित कई शक्तियों की फिर से जाँच की गई है और शासन के कई नए प्रावधान जोड़े गए हैं, उदाहरण के लिए पंचायती राज आदि।

न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका और स्वतंत्र निकायों में निहित संतुलित शक्ति ने नागरिकों को प्रभावी ढंग से शासन में योगदान करने में मदद की है। संविधान द्वारा प्रदत्त न्याय की इस भावना को कभी नहीं भूलना चाहिए। इस मशीनरी के प्रभावी ढंग से प्रसंस्करण में विश्वास रखना चाहिए।

हमने कई मौकों पर अपने सपने को टूटते हुए देखा है लेकिन फिर भी हम हर मुसीबत की स्थिति से मजबूत और आत्मविश्वास से भरे हुए हैं। स्वराज के महत्व को समझना चाहिए और इन सपनों को आगे बढ़ाने के लिए आक्रामक रूप से शुरुआत करनी चाहिए ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को भी बेहतर भविष्य प्रदान कर सकें। मैं डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के बेहतरीन उद्धरणों पर समाप्त करना चाहता हूं "सपने वह नहीं हैं जो आप नींद में देखते हैं, बल्कि वह हैं जो आपको सोने नहीं देते"।

डॉ. सत्यवान सौरभ,

गद्दाम प्रसाद कुमार निर्विरोध चुना गया विध. सभा अध्यक्ष

हैदराबाद। तेलंगाना में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गद्दाम प्रसाद कुमार को गुरुवार को सर्वसम्मति से तीसरी तेलंगाना विधानसभा का अध्यक्ष चुना गया। गद्दाम सभी विधायकों के समर्थन से तेलंगाना विधानसभा के लिए चुने गए पहले दलित स्पीकर हैं। प्रोटेम स्पीकर अकबरुद्दीन ओवैसी ने कहा कि बुधवार को कोई अन्य नामांकन दाखिल नहीं होने के कारण उन्हें निर्विरोध चुना गया। उन्होंने आज सदन में घोषणा की कि उनकी उम्मीदवारी का प्रस्ताव सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) सहित 23 सदस्यों ने किया था। नए अध्यक्ष के चुनाव की घोषणा करने से पहले, प्रोटेम स्पीकर ने उन सदस्यों को शपथ दिलाई, जो नौ दिसंबर के समारोह में शामिल नहीं हो सके। नवनिर्वाचित अध्यक्ष को अपनी शुभकामनाएं देते हुए, मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने कहा कि अध्यक्ष ने अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत एमपीटीसी, फिर मंडल परिषद क्षेत्रीय निर्वाचन क्षेत्र, विधायक के रूप में की थी और हथकरघा मंत्री के रूप में भी काम किया था।

प्रसाद के नए अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने के तुरंत बाद, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सदस्य सदन में आ गये। अध्यक्ष ने इसके बाद भाजपा के आठ विधायकों को शपथ दिलाई। प्रसाद ने कहा,"मैं विधानसभा को सुचारू रूप से और कुशल तरीके से चलाने के लिए सभी सदस्यों का सहयोग चाहता हूं।" विधानसभा की बैठक शुक्रवार सुबह 11.30 बजे के लिए स्थगित कर दी गई है। राज्यपाल डॉ तमिलिसाई सौंदर्यराजन शुक्रवार को विध. सभा के दोनों सदनों के सदस्यों को संबोधित करेंगी। तेलंगाना विधान परिषद भी अपने उन्नीसवें सत्र के लिए 15 दिसंबर को 11:30 बजे बैठक करेगी।

संसद में सुरक्षा में उल्लंघन की जांच के लिए जांच समिति गठित

- **लोकसभा सचिवालय के अनुरोध पद केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने दिये जांच के आदेश**

नई दिल्ली। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने लोकसभा सचिवालय के अनुरोध पर संसद की सुरक्षा में उल्लंघन की जांच का आदेष दिया है। मंत्रालय के प्रवक्ता के अनुसार, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक मनीष दयाल सिंह के नेतृत्व में एक जांच समिति गठित की गई है। जिसमें अन्य सुरक्षा एजेंसियों के सदस्य और विशेषज्ञ शामिल हैं। जांच समिति संसद में सुरक्षा में सेंध के कारणों की जांच के अतिरिक्त खामियों की पहचान करेगी और आगे की कार्यवाही की सिफारिश करेगी। समिति संसद की सुरक्षा में सुधार के सुझावों और सिफारिशों के साथ जल्द से जल्द अपनी आख्या सौंपेगी।

दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ ने संसद की सुरक्षा में हुई चूक की घटना में अवैध गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत प्रकरण दर्ज किया है।

सूत्रों के अनुसार, इस मामले में उच्चस्तरीय जांच चल रही है। हरियाणा पुलिस भी आरोपियों के बारे में जानकारी एकत्र कर रही है ताकि उसे दिल्ली पुलिस के साथ साथ साझा किया जा सके। केन्द्रीय सचिव अरुण कुमार भल्ला, दिल्ली पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक अनीश दयाल सिंह और कई अन्य ने गत गुरूवार को इस घटना के विषय में संसद भवन का दौरा किया। फॉरेंसिक टीम ने संसद के बाहर और अंदर प्रयोग में आने वाले रंगीन धुएं से जुड़े नमूने एकत्र किये।

शपथग्रहण समारोह संपन्न

छत्तीसगढ़। भाजपा के वरिष्ठ नेता विष्णुदेव साव ने गत गुरुवार को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री पद के रूप में शपथ ली। राज्यपाल विष्णु भूषण ने उन्हें शपथ दिलाई। इसी तारतम्यता में भाजपा के वरिष्ठ नेता मोहन यादव ने भी मुख्यमंत्री पद की षपथ ली। राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

आम आदमी पार्टी को झटका, विधायक भूपेंद्र भयानी ने दिया इस्तीफा

अहमदाबाद। जूनागढ़ जिले की विसावदर सीट से विधायक भूपेंद्र भयानी ने आम आदमी पार्टी की प्राथमिकता सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। इसके साथ ही वह अब जल्द ही भाजपा में शामिल होंगे। गुजरात में विधायक भूपेंद्र भयानी ने बुधवार को राज्य विधानसभा और आम आदमी पार्टी (आप) की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने दावा किया कि 'आप' लोगों की सेवा करने के लिए सही मंच नहीं था। भयानी ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि उन्होंने अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में भी इस्तीफा दे दिया है और जल्द ही वह सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होंगे।

विधानसभा स्पीकर को सौंपा इस्तीफा

विधायक को भूपत भयानी के नाम से भी जाना जाता है। एक अधिकारी ने बताया कि जूनागढ़ जिले की विसावदर सीट से विधायक भयानी ने गांधीनगर में सुबह गुजरात विधानसभा अध्यक्ष शंकर चौधरी को अपना इस्तीफा सौंपा। अपने इस्तीफे में उन्होंने कहा कि वह एक विधायक के रूप में इस्तीफा दे रहे हैं। लेकिन उन्होंने इस फैसले के पीछे किसी कारण का जिक्र नहीं किया। गुजरात विधानसभा के सचिव डीएम पटेल ने कहा, 'विधानसभा अध्यक्ष ने भयानी का इस्तीफा स्वीकार कर लिया है।'

बेटों को बचाओ नशा छुड़ाओ

आजकल बेटियों को बचाने पर सबका है जोर
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ बस एक यही है शोर
बेटियां तो अपनी मेहनत से आगे बढ़ रही हैं
लेकिन इस अनदेखी में बेटा हो गया है कमज़ोर
बेटी और बेटा दोनों से ही इस ज़हां की है शान
एक भी न हो तो यह महकता गुलसिताँ है वीरान
बेटियों पर दे रहे जरूरत से ज्यादा तब्बजो
बेटों पर कम हो गया है सभी का ध्यान
थोड़ा ध्यान अब बेटों पर भी दीजिए
समय बीत रहा है देर मत कीजिये
नशे की गिरफ्त में जो फंस गया है युवा
सही रास्ते पर आ जाएं ऐसा कुछ कीजिये
उनके साथ बैठिए कुछ समय निकाल
क्या समस्या है जानिए उनके दिल का हाल
प्यार यदि उनको माँ बाप का मिल जाएगा
यकीन मानिए बदल जाएगी उनकी चाल
अपनी इच्छाएं मत थोपिए जो चाहें वही करने दीजिए
समझदार और बड़े हैं वो भी टोकाटोकी मत कीजिये
वो क्या करना चाहते हैं क्या उनके दिल में है
मन से करेंगे तो अच्छा ही होगा यह मान लीजिये

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

छात्रों के सुसाइड करने पर शिक्षा मंत्री ने जताई चिंता

कोटा। राजस्थान के औद्योगिक शैक्षणिक शहर कोटा में छात्रों के सुसाइड को लेकर शिक्षा मंत्री बीडी कल्ला ने छात्रों को दी सलाह। हाल ही में राजस्थान के औद्योगिक शैक्षणिक शहर कोटा में विद्यार्थियों के जरिए आत्महत्या करने के मामले सबसे ज्यादा देखने को मिल रहे हैं. जहिर है भारत के विभिन्न राज्यों के विद्यार्थी लाखों की संख्या में विद्यार्थी मेडिकल, इंजीनियरिंग सहित अन्य विषय की तैयारी करने के लिए कोचिंग संस्थान में एडमिशन लेने के लिए आते हैं। लेकिन हाल की के दिनों में छात्रों को जरिए बढ़ती आत्महत्या की घटना शहर के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। इसे लेकर राजय के शिक्षा मंत्री बी.डी. कल्ला ने भी चिंता जताई है।

इस बारे में शिक्षा मंत्री कल्ला का कहना है कि आज के दौर में विद्यार्थी मानसिक तनाव में आकर आत्महत्या जैसा बड़ा कदम उठाते हैं, जो कि एक समाज के लिए सोचने का विषय है. छात्रों को हर समय अपनी जीवनशैली में बदलाव लाते रहना चाहिए जिससे उनकी मानसिक सेहत ठीक रहे और वह पढ़ाई में अपना मन लगा सकें, लेकिन कई छात्र कॉपिटिशन एग्जाम में अच्छा प्रदर्शन करने के कारण रात रात भर जाग कर पढ़ाई करते हैं, और दिन में कोचिंग क्लास में जाकर पढ़ते हैं। जिससे उनकी नींद पूरी नहीं होती और वह कई बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। विद्यार्थियों को तनाव मुक्त रहना चाहिए किसी भी प्रकार का मानसिक तनाव छात्रों को नहीं लेना चाहिए। इसके साथ ही यह भी बताया की आए दिन छात्रों की आत्महत्या की घटनाओं को बढ़ता देख प्रशासन ने कुछ बतौर एतिहायातन पर कुछ कदम उठाएं है, जो कोटा के कोचिंग संस्थानों में पढ़ रहें छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के दौरान तनाव और चिंता से बाहर निकालने में मदद करेंगी। जैसे छात्रों को योग सत्रों, जुम्बा कक्षाओं से लेकर परामर्शदाताओं की एक टीम को तैनात किया जाएगा. इसके अलावा 24 घंटे सातों दिन कार्यरत हेल्पलाइन की व्यवस्था की गई है।

प्रज्ञान : बच्चों के लिए संवेदनात्मक रचनाएँ

सन् 1989 में हरियाणा में जन्मे डॉ सत्यवान सौरभ बालसाहित्य के एक सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। साहित्यकार, पत्रकार और अनुवादक डॉ सत्यवान सौरभ ने बच्चों के साथ ही बड़ों के लिए भी विपुल साहित्य सृजन किया है। बाल कविता की पुस्तकों के साथ ही प्रौढ़ साहित्य में दोहा, कथा, कविता, अनुवाद, रूपान्तर, सम्पादन की कई कृतियों का सृजन कर उन्होंने हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। बीस वर्षों से स्वतंत्र रूप से लेखन कर साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं।

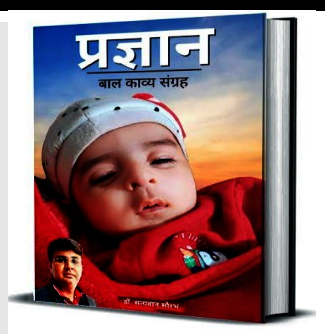

प्रज्ञान, बाल साहित्यकार डॉ सत्यवान सौरभ जी की इक्यावन बाल कविताओं का सुन्दर संग्रह है। इन कविताओं में जीवन के विविध रंग देखने को मिलते हैं। इनमें प्रकृति का सौन्दर्य है तो समाज की कुरूपता भी है। जहाँ बचपन के आनन्द का सजीव चित्रण है वहीं आर्थिक विवशताओं के कारण काम के बोझ तले दबे बच्चों का मर्मस्पर्शी वर्णन है। बचपन जीवन का स्वर्णिम काल होता है लेकिन सभी बच्चों का बचपन एक – सा नहीं होता। कुछ बच्चों का बचपन काल के क्रूर हाथों द्वारा मसल दिया जाता है। इस कसक की झलक इस संग्रह में देखी जा सकती है–

कागज़ पर शिक्षा मिले, वादों में बस प्यार।
बालदिवस पर बाँटते, भाषण प्यार–दुलार।।
दो रोटी की चाह में, लूटता है संसार।
फुटपातों पर रेंगते, झोली रहे पसार।।
बचपन को यूं मिल रहा, सौरभ रोज दुलार।
गाली की लोरी मिले, लातों के उपहार।।

संग्रह की पहली कविता 'बने संतान आदर्श हमारी' है इसमें एक माता–पिता अपने आने वाले बच्चे के लिए सपने संजोते है। माता–पिता अपना बच्चा कैसा चाहते है। अपने आने वाले बच्चे के बारे में कवि सोचता है। हमारे नायकों का उदाहरण देते हुए कवि का कहना है कि उनका बच्चा भी जीवन में उनके अच्छे गुणों का समावेश करें और उनके बताये रास्ते पर चले। इस कविता में हमारे वीर–वीरांगनाओं का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। कवि का मानना है कि हर आम बच्चे में हमारे आदर्शों का होना जरुरी है –

पुत्र हो तो प्रह्लाद–सा,
राह धर्म की चलता जाये।
ध्रुव तारा सा अटल बने वो,
सबको सत्य पथ दिखलाये।।
पुत्री जनकर मैत्रियी, गार्गी,
ज्ञान की ज्योत जलवा दूँ मैं।
बने संतान आदर्श हमारी,
वो बातें सिखला दूँ मैं।।

बालसाहित्य बच्चों का साहित्य है। इसमें बच्चों की कोमल भावनाओं का ध्यान रखा जाता है। बच्चे मनोरंजन पसन्द करते हैं, लेकिन कवि चाहता है कि बच्चे जीवन के विषय में भी जानकारी प्राप्त करें। आसपास जो विसंगतियाँ फैली हुई हैं उनसे बच्चों को अवगत कराना भी कवि अपना धर्म समझता है। वह बच्चों की संवेदनशीलता को सम्पूर्ण समाज तक विस्तृत करना चाहता है। 'गूगल की आगोश में ' कविता में कवि की यह भावप्रवण संवेदना मर्मस्पर्शी है –

छीन लिए हैं फ़ोन ने, बचपन से सब चाव।
दादी बैठी देखती, पीढ़ी में बदलाव।।
मन बातों को तरसता, समझे घर में कौन ।
दामन थामे फ़ोन का, बैठे हैं सब मौन।।
नई सदी में आ रहा, ये कैसा बदलाव।
रिश्तों से ज्यादा हुआ, आज फ़ोन से चाव।।

बच्चे प्रकृति से अपनापन अनुभव करते हैं। प्राकृतिक दृश्य उन्हें बहुत लुभाते हैं। कवि के अन्दर का नन्हा बच्चा भी प्रकृति के इन मनोरम दृश्यों को मुग्ध होकर देखता है। 'बचपन के वो गीत' एक ऐसी ही कविता है जिसमें कवि ने बचपन का मानवीकरण करते हुए इसके क्षण – क्षण परिवर्तित रूप का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। प्रतीकात्मक और लाक्षणिक शैली का प्रयोग देखते ही बनता है –

बैठे–बैठे जब कभी, आता बचपन याद ।
मन चंचल करने लगे, परियों से संवाद ।।
मुझको भाते आज भी, बचपन के वो गीत ।
लोरी गाती मात की, अजब–निराली प्रीत ।।
छीन लिए हैं फ़ोन ने, बचपन से सब चाव ।
दादी बैठी देखती, पीढ़ी में बदलाव ।।

कवि की करुणा का फैलाव हर दीन – दुःखी व्यक्ति से लेकर पशुओं तक है। आज देश भर में गाय पशु की स्थिति के प्रति कवि समानता, सहयोग और सहानुभूति का व्यवहार करने का आग्रह करता हुआ 'गायों की दुर्दशा' कविता में कहता है –

आज गाय माँ पर अरे, कुछ तो कर लो गौर।
दूध पिलाती जो रही, खाकर सूखे कौर।।
दूध थनों से क्या गया, सौरभ हुआ निचोड़।
माता जैसी गाय को, दिया भटकने छोड़।।
गौ है अपने देश में, बेबस और अनाथ।
तभी उसे मिलता नहीं, अपने ही घर साथ।।

बच्चे की दुनिया माँ के आसपास घूमती है और माँ की दुनिया तो बच्चे ही होते हैं। माँ स्वयं दुःख सहकर बच्चे को हर सुख देना चाहती है। 'माँ हरियाली दूब' एक छोटी – सी कविता है लेकिन इस कविता में कवि ने माँ की सारी ममता को गहराई के साथ उकेर दिया है –

तेरे आँचल में छुपा, कैसा ये अहसास।
सोता हूँ माँ चैन से, जब होती हो पास।।
माँ ममता की खान है, धरती पर भगवान।
माँ की महिमा मानिए, सबसे श्रेष्ठ–महान।।
माँ कविता के बोल–सी,कहानी की जुबान।
दोहो के रस में घुली, लगे छंद की जान।।

माँ, परिवार की धुरी होती है। माँ के त्याग और समर्पण के कारण ही घर सुचारू रूप से संचालित होता है। घर के सदस्यों की सुख – सुविधाओं का ध्यान रखते – रखते माँ अपने सुख की ओर कभी ध्यान नहीं देती। 'आँचल की छाया' कविता में माँ के इसी त्यागमय स्वरूप के प्रति अपनी निश्छल संवेदना दर्शाता एक बच्चा कहता है –

मंदिर– सम पावन अहो, शुभता शुचिता धार।
हमें सतत देती यहाँ, मां जीवन आधार।।
त्याग और बलिदान का, माँ ही है प्रतिरूप।
आँचल की छाया करे, हर संकट की धूप।।
माँ जैसा संसार में, सौरभ नहीं सुजान।
माँ की वाणी में निहित , गीता का सब ज्ञान।।

कवि का मानना है कि हमें परिवर्तनों को सहज स्वीकार करना चाहिए। बड़े – बुजुर्ग लोग हर समय परिवार के लिए मजबूत स्तम्भ रहें हैं। कवि को उनका जाना पसन्द नहीं है। दादा –दादी के जाने के बाद कवि का जीवन सूना हो गया है, कवि तरह – तरह की कल्पना करता है जिससे कि हर समय उसे उनकी याद आती है। 'दादा–दादी ' कविता में कवि की कल्पना की ताजगी द्रष्टव्य है –

दादा–दादी बिन हुआ, सूना–सूना द्वार द्य
कौन कहानी अब कहे, दे लोरी का प्यार ।।
दादा–दादी बन गए, केवल अब फरियाद।
खुशियां आँगन की करे, रह–रह
उनको याद।।
रो ले, गा ले, हँस ले, दादा–दादी साथ।
ये आँगन से क्या गए, जीवन हुआ अनाथ।।

इस कृति की कविता 'अनुपम त्योहार' में कवि ने त्योहारों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहा है कि त्यौहार प्यार और सद्भाव का भंडार होते हैं। त्यौहार न केवल हमारा मनोरंजन करते हैं, वरन तरह–तरह की जानकारियाँ देकर ये हमारे अनुभव का विस्तार भी करते हैं। स्वस्थ मनोरंजन और शिक्षा प्रदान करने वाले त्यौहार, बच्चों के सच्चे साथी होते हैं –

आभा जीवन की रहे, "तीज" और "त्योहार"।
"रंग" भरे मन में करे, नव जीवन संचार।।
त्याग तपस्या जाप से, उगे नेह के बीज।
हो पूरी मन कामना, पूजे भादो तीज।।
रक्षा बंधन प्रेम का, हृदय का त्योहार ।
इसमें बसती द्रौपदी, है कान्हा का प्यार।।

कवि की संवेदनशीलता का हाल यह है कि वह पुराने हो चुके झाड़ू में भी वृद्ध लोगों की छवि देखता है। कवि का हृदय वृद्धों की उपेक्षा से व्यथित है। 'काम लेकर फेंक देने की प्रवृत्ति', स्वार्थ और संकीर्णता पर आधारित है। वृद्धों का सम्मान करने की सीख देती कविता 'वृद्धों की हर बात का' अद्भुत है –

वृद्धों की हर बात का, रखता कौन खयाल।
आधुनिकता की आड़ में, हर घर है बेहाल।।
यश वैभव सुख शांति के, यही सिद्ध सोपान।
घर है बिना बुजुर्ग के, खाली एक मकान।।
होते बड़े बुजुर्ग है, सारस्वत सम्मान।
मिलता इनसे ही हमें, है अनुभव का ज्ञान।।
सबकी खिड़की बंद है, आया कैसा काल।
बड़े बुजुर्गो को दिया, घर से आज निकाल।।

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रज्ञान बाल संग्रह की रचनाओं का प्रमुख स्वर मानवीय संवेदना और करुणा है। शांत नदी की तरह बहती ये कविताएँ पाठक के मन को शीतल भावों की लहरों से भिगो देती हैं। इन कविताओं में गम्भीरता एवं शालीनता है और तटबंधों का अनुशासन है। पर्यावरण, मौसम, धूप, सुबह, चिड़िया, तितली, गिलहरी, पत्ते, घास, हाथी, बादल,झील, चाँद, सूरज, बचपन, मम्मी, पापा, दीया, चिठ्ठी–पत्री, बेटियां, नया साल, देश, त्यौहार, नैतिकता, क्षमा भाव, हमारे शहीद, ट्यूशन, गूगल, तिरंगा, किताब, स्कूल, पुलिस, नाना–नानी और अन्य रिश्तों आदि विषयों पर बालमनोविज्ञान के अनुरूप सुन्दर रचनाओं का सृजन पूरी गम्भीरता के साथ किया गया है । ये रचनाएँ एक हल्के – से घटनाक्रम को लेकर आगे बढ़ती हैं अतः इनमें कथातत्त्व का भी समावेश है जो जिज्ञासा से बालमन को अंत तक बाँधे रखता है। इन कविताओं में बच्चों ही नहीं, अभावों से जूझते समाज के श्रमिक वर्ग का भी चित्रण है। इन सबका उद्देश्य यह है कि कवि बच्चों की कोमल भावनाओं की रक्षा करते हुए उनमें दुखियों के प्रति संवेदना का भाव जगाना चाहता है। छन्द में लिखी ये रचनाएँ गीत और कविता का मिलाजुला रूप है। इनमें लय और प्रवाह है जो इन कविताओं को प्रभावशाली बनाता है। भाषा बालमन के अनुरूप सरल, सरस और सहज बोधगम्य है। मुद्रण सुन्दर एवं त्रुटिरहित है। फैलते आकाश के साथ प्रज्ञान के मनमोहक चित्र से सजा आवरण अत्यन्त आकर्षक है। बालमन को लुभाने वाले मनोरंजक एवं संवेदनशील कविताओं से सजी पठनीय कृति 'प्रज्ञान' के सृजन के लिए डॉ सत्यवान सौरभ को हार्दिक बधाई।

समीक्षक–

सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'
3 फ 22 विज्ञान नगर,
कोटा–324005 (राज.)

मैं गुलाब हूँ

फूलों की दुनिया का राजा,
खूबसूरती में लाजवाब हूँ,
मैं गुलाब हूँ।
छूना मुझको ज़रा प्यार से,
नाजुक मेरा अंग अंग है।
वरना टूट बिखर जाऊंगा,
गर्दन मेरी ज़रा तंग है।।
मैं शरमाई सी बैठी हुई,
मोहतरमा का जैसे हिजाब हूँ,
मैं गुलाब हूँ।
खुशबू मेरी बरबस ही यूँ,
मोहब्बत पैदा करती है।
मुझसे ही तो जवां दिलों की,
प्यार की दुनिया सँवरती है।।
मैं दो प्रेमी को इक दूजे का,
इज़हारे इश्क़ का जवाब हूँ,
मैं गुलाब हूँ।
मेरी अपनी दुनिया कैसी है,
देखो कॉटों के बीच खिला हूँ।
गैरों को खुशियाँ देने खुद,
तकलीफ़ों से रोज़ मिला हूँ।।
तपती रेगिस्तान के लिए,
ठंडक लाया महताब हूँ,
मैं गुलाब हूँ।

तुषार शर्मा "नादान"
श्राजिम जिला–गरियाबंद
छत्तीसगढ़

झुंझनू के खेताड़ी में खेतड़ी दिवस मनाया गया

झुंझनू। रामकृष्ण मिशन के सचिव स्वामी आत्मा निष्ठानन्द ने बताया कि 12 दिसंबर को ही स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के शिकागो से वर्ष 1897 में खेतड़ी लौटे थे। उनके लौटने पर खेतड़ी में दिये जलाकर दीवाली मनाई गई थी। इसकी याद में खेतड़ी विरासत दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर सुबह विद्यार्थियों ने प्रभात फेरी निकाली।

नासमझ बेटा

मात– पिता की बात मान लो, नही पड़े दुख सहना,
समझा– समझा हार गए क्यों, नहीं मानते कहना,
कहने बैठो गर कुछ इनको, कहे नासमझ हमको,
भूल रहे जीवन से शिक्षा, दूर करे है तमको।

इनकी बातें बड़ी निराली, चकित सभी को करती,
सुने नहीं है बात बड़ों की ,देख इन्हें माँ डरती,
जुबां चलाएं सबके आगे ,करते हैं मनमानी,
घर में अपना रौब जमा कर,करते है नादानी।

दो आखर को पढ़ कर समझे, खुद को बेशक ज्ञानी।
पड़ जाए जो बोझ उठाना, याद करे वो नानी,
फिर मत कहना नहीं समझ थी, हमें नहीं समझाया,
निकल गया जो समय हाथ से, लौट कहो कब आया।

बन जायेगा जीवन तेरा, सुनो ध्यान धर बातें,
तेरे ही सुख खातिर जागे, हैं हम कितनी रातें,
केवल सच ही जीवन नैया पार करेगा तेरी,
इसीलिए बेटा बातों पर, अमल करो बिन देरी

सीमा रंगा इन्द्रा

तू खुद को खोजता चल

मन तू क्यों उदास है
कोई तेरे साथ चले न चले
मंजिलों को भी
तेरी तलाश है
रास्ते कठिन हैं तो क्या हुआ
हारना तो तेरा काम नहीं
तू खुद से प्रीत तो कर
ईश्वर जरूर तेरे साथ है
पत्थरों से क्यों उम्मीद है
सूरज की राह चल तो सही
कोई तेरा साथ दे न दे
तेरी हिम्मत तो तेरे साथ है
अंधेरों से क्यों डर रहा
लहरों पर क्यों मचल रहा
कोई तेरे साथ हो न हो
सच आज भी तेरे साथ है

वर्षा वार्ष्णेय
अलीगढ़

साहित्य संगम संस्थान गुजरात इकाई का तृतीय वार्षिकोत्सव धूमधाम से हुआ संपन्न'

साहित्य संगम संस्थान गुजरात इकाई
रा. पंजीकरण सं0 1801/2017 नई दिल्ली
तृतीय वार्षिकोत्सव
दिनांकः- 13 दिसंबर,2023
वारः-बुधवार
राजवीर सिंह मंत्र राष्ट्रीय अध्यक्ष
डॉ राजेश पुरोहित उपाध्यक्ष
मिथिलेश सिंह मिलिंद कार्यकारी अध्यक्ष
नंदिता माजी शर्मा सह- अध्यक्षा
कविराज तरुण सक्षम महासचिव
आ.छाया सक्सेना कोषाध्यक्ष
सबका हार्दिक स्वागत
डॉ. रतन कुमार शर्मा 'रत्न' अध्यक्ष
आ. सोनल ओमर जी सचिव
आ. शीतल सिंह देवाड़ी पंच परमेश्वरी
आ. राकेश कुमार मिश्रा सह अध्यक्ष

नई दल्ली। देश–विदेश की जानी–मानी पंजीकृत, साहित्य में अपनी अलग पहचान रखने वाली संस्था 'साहित्य संगम संस्थान' के गुजरात प्रदेश इकाई के स्थापना दिवस की तृतीय वर्षगाँठ 13 दिसंबर को बड़े धूमधाम से मनाई गई।

राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी डॉक्टर राजेश पुरोहित को गुजरात इकाई अध्यक्ष ने बताया कि प्रातः 9 बजे से रात 8 बजे तक चले इस कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष आ. राजवीर सिंह 'मंत्र' जी द्वारा द्वीप प्रज्वलन और शंखनाद द्वारा किया गया। तदुपरांत गुजरात इकाई की सचिव आ. सोनल मंजूश्री ओमर जी एवं आ. अंकुर सिंह जी द्वारा सरस्वती वंदना करके माँ शारदे का आवाहन किया गया। इकाई के अध्यक्ष आ. डॉक्टर रतन कुमार शर्मा 'रत्न' जी ने स्वागतीय संबोधन द्वारा सभी को कार्यक्रम में आमंत्रित एवं स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आ. जगदीशचंद्र गोकलानी जी के उद्बोधन द्वारा की गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आ. डॉक्टर कमल किशोर दूबे जी और विशिष्ट अतिथि आ. प्रमोद पांडे जी रहे, उन्होंने अपने उद्बोधन द्वारा इकाई के सभी कार्यकारी पदाधिकारियों की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए इकाई की साहित्यिक योगदान की भूमिका को सराहा।

वार्षिकोत्सव समारोह में सभी प्रतिभागियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। सभी प्रतिभागियों संग गुजरात इकाई के सभी सक्रिय सदस्यों को सम्मानित करते हुए संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजवीर सिंह 'मंत्र' जी ने अपने प्रेरणात्मक उद्बोधन द्वारा लोगो का मन मोह लिया। अंततः गुजरात इकाई के अध्यक्ष आ. डॉक्टर रतन कुमार शर्मा 'रत्न' जी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अपने उद्बोधन द्वारा समारोह का समापन किया।

अबकी प्रयोगशाला नही बनेगा लोकसभा क्षेत्र देवरिया

1996 से ही बाहरी लोगों के नेतृत्व का दंश झेल रहा यह क्षेत्र

देवरिया। उत्तर प्रदेश और बिहार की सीमा से सटे अतिमहत्वपूर्ण लोकसभा क्षेत्र देवरिया के लोग अब बाहरी प्रत्याशियों के नेतृत्व से त्रस्त हो चुके हैं। वर्ष 1996 से ही बाहरी लोगों को केवल सिंबल के सहारे चुनने वाले इस क्षेत्र के लोग इस बार अलग ही मन बना चुके हैं। ऐसे समय में जबकि भाजपा का आंतरिक सर्वे भी चल रहा है, यहां के लोग बहुत खुल कर अपनी राय रखने लगे हैं। सामान्य प्रतिक्रिया यही है कि इस बार पार्टी अपने स्थानीय कार्यकर्ता में से किसी को टिकट देगी तो ही बेड़ा पार होगा। यदि फिर से कोई बाहरी चेहरा स्काई लैब की तरह प्रक्षेपित होगा तो उसे प्रबल विरोध झेलना पड़ेगा और नुकसान होगा। इससे पहले कि इस क्षेत्र के लोगों की राय पर बात हो, पहले यह जान लेते हैं कि असली माजरा है क्या। दरअसल देवरिया लोकसभा सीट के क्षेत्र में देवरिया जिले की तीन और कुशीनगर जिले की दो विधानसभा सीटें आती हैं। यहां के लोग बताते हैं कि देवरिया सीट से किसी को भी भाजपा का टिकट मिल जाना ही जीत की गारंटी मान ली गई है क्योंकि वर्ष 1996 से ऐसा ही हो रहा है। बताया जा रहा है कि 1996 से पहले यहां रामायण राय और मोहन सिंह बारी बारी से चुनाव जीतते थे लेकिन 1996 में भाजपा ने जनरल श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी को टिकट दिया और वह लगातार विजय पाते रहे। जानकार लोग बताते हैं कि जनरल साहब के लगातार चुनाव जीतने की असली वजह होती थी कि उनके पिता सूरति नारायण मणि त्रिपाठी की विरासत के साथ ही उनके भाई श्री बाबू की स्थानीय राजनीति में बहुत पकड़ थी। जनरल साहब सेना से आए थे लेकिन पारिवारिक आधार ने उन्हें हर बार विजय दिला दी वरना उनकी गिनती आज भी देवरिया के लोग बाहरी में ही करते हैं। जानकारों के अनुसार जनरल साहब का टिकट काट कर भाजपा ने कलराज मिश्र को 2014 में यहां से उतारा और वह भी जीत गए। फिर 2019 में भाजपा ने रमापति राम त्रिपाठी को यहां से उतार दिया और सीट पर वह काबिज हो गए। कलराज मिश्र और रमापति राम त्रिपाठी का देवरिया अथवा कुशीनगर जिले से कोई संबंध नहीं है। लोग कहते हैं कि 1996 से 2019 तक के इस प्रयोग ने देवरिया संसदीय क्षेत्र को बहुत पीछे कर दिया है। बताया जा रहा है कि देवरिया संसदीय क्षेत्र में देवरिया सदर, रामपुर कारखाना और पथरदेवा विधानसभा सीटें देवरिया जिले की हैं जबकि फाजिलनगर और तमकुही की विधानसभा सीटें कुशीनगर जिले से आती हैं। लोगों का यह गंभीर आरोप है कि लगातार बाहरी नेताओं की जीत के कारण यह क्षेत्र बहुत पिछड़ गया है।

अपने पूर्वजों की अच्छाई एक ऐसी धरोहर है जिसे बनाए रखने की जिम्मेदारी वंशजों पर होती है लेकिन इस अमानत को बहुत कम लोग संवार कर रख पाते हैं जो इंसान इसमें सफल होता है उनकी बात बहुत ही निराली होती है। यहां जी धरोहर की चर्चा कर रहे हैं वह मशहूर अभिनेता बलराज साहनी की कलाकारी है और अपने पिता की अच्छाई पर जिसने कलंक लगे नहीं दिया उस बेटे परीक्षित साहनी की

भूमिका छोटी हो या बड़ी परीक्षित साहनी ने बड़े कलाकारों के साथ बड़ी खूबसूरती के साथ काम किया"

अपने जमाने के महान अभिनेता साहित्य लेखक और सशक्त समाज सेवक बलराज साहनी से तो सभी लोग सुपरिचित हैं पर उनके पुत्र परीक्षित साहनी उत्कृष्ट फिल्मों में अभिनय किया और आज की पीढ़ी उन्हें सिर्फ 3 ईडियट्स पीके जैसी मूवी के लिए जानती और पहचानती है लेकिन इनका इतिहास लगभग 70 साल पुराना है बहुत कम लोग ही जानते होंगे की परीक्षा साहनी ने एक बाल अभिनेता के तौर पर काम करना शुरू किया था कहना का आशय यह है कि सन 1951 से अभिनय क्षेत्र में वह सक्रिय हैं।

परीक्षा चांदनी का जन्म अभिभाजित भारत रावलपिंडी क्षेत्र के मूरी इलाके में 1 जनवरी 1944 को माता दमयंती साहनी और पिता बलराज साहनी के घर हुआ था। बताते चलें कि बलराज साहनी की तरह ही दमयंती भी एक मंत्री कलाकार थी पर उनके आकस्मिक निधन के बाद बलराज साहनी को दूसरी शादी रचानी पड़ी परीक्षित के जन्म के बाद बलराज साहनी अपने परिवार के साथ शांतिनिकेतन में रहने लगे और वही अध्यापक का काम करते थे।

अक्सर यह देखा जाता है कि एक अभिनेता का फिल्म में करियर उसकी पढ़ाई के बाद यह पढ़ाई के साथ शुरू हो जाता है मगर परीक्षित साहनी के साथ इसका उलटा हुआ। वह ऐसे भारत–पाकिस्तान बंटवारे के बाद बलराज साहनी को अपनी पत्नी और बेटे परीक्षित के साथ अंबाला आना पड़ा। वहां से वह अलग–अलग शहरों में रहने लगे अंतत उन्होंने मुंबई को चुना और यहां आकर बलराज को आर्थिक तंगियों का सामना करना पड़ा। उसके बाद उनका रिश्ता फिल्मी जगत से जुड़ा फिर भी उनके घर की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। इसी वजह से बलराज साहनी को अपने बेटे परीक्षित को फिल्म जगत में उतरना पड़ा उसे वक्त परीक्षित साहनी से 7 वर्ष के थे जब उनकी पहली फिल्म दीदार में रिलीज हुई। 1951 में रिलीज होने वाली इस फिल्म में दिलीप कुमार नरगिस शादी कलाकार थे छोटी सी उम्र में परीक्षित साहनी को बड़ी फिल्म मिली इस फिल्म में उन्होंने कुछ ऐसा काम किया जिससे उन्हें काफी ख्याति मिली। इसी वर्ष परीक्षित साहनी की दूसरी फिल्म हलचल भी आ गई जिसमें उनके पिता पाल राज साहनी दिलीप कुमार और नरगिस भी थे। यह एक सुखद घटना देखने के लिए तो लुभावने थी लेकिन बलराज साहनी के मन में यह बात चुभने लगी कि वह अपने बेटे से काम करवा रहे हैं वह भी उस उम्र मे जिसमें बेटे को पढ़ाई करनी चाहिए थी। बलराज ने यह सोचा कि वह ज्यादा काम करके घर की हालत ठीक करेंगे और परीक्षित को पढ़ाएंगे।

इसलिए उन्होंने परीक्षित साहनी को खुद से दूर किया और पढ़ने के लिए अपने भाई भीष्म साहनी के पास भेज दिया।

ध्यातव्य है कि परीक्षित साहनी 17 वर्षों तक फिल्म जगत से दूर रहे और इन 17 वर्षों में परीक्षित ने उच्च श्रेणी का प्रशिक्षण लिया और स्नातक के बाद उन्होंने मुंबई के आर्ट्स कॉलेज जेजे स्कूल आफ आर्ट में दाखिला लिया। पर कुछ साल गुजारने के बाद उन्होंने सोचा कि आखिर उन्हें आर्किटेक्ट बनना चाहिए इसलिए बलराज साहनी ने परीक्षित को रशिया भेजा। रसिया आने के बाद परीक्षित को आभास हुआ कि उनके गणित बहुत कमजोर है प्रवेश परीक्षा देने के बाद परीक्षित ने अपना निर्णय बदल दिया और इस देश में मास्टर स्कूल ऑफ फिल्म मेकिंग में दाखिला लिया और यहां पर उन्होंने 5 साल तक प्रशिक्षण लिया तथा भारत वापस लौट आए।

मुंबई पहुंचने पर परी क्षिति साहनी का मुख्य उद्देश्य फिल्म मेकिंग करना और फिल्म मेकर बनना था वह डायरेक्टर और लेखक बनना चाहते थे इसलिए उन्होंने अपने पिताजी के नाम पर प्रोडक्शन हाउस भी खोला। 5 वर्ष रहने के बाद उनकी रशिया में हिंदी कमजोर हो गई। इस वजह से उन्हें संवाद बोलने में दिक्कत आने लगी इस पर अभिनेता संजीव कुमार ने उनकी अच्छी मदद की। दरअसल जब परीक्षित साहनी भारत लौट कर आए थे तब उनके ख्याल में बस यह था कि उन्हें स्क्रिप्ट लिखनी है और फिर मैं निर्देशित करनी है लेकिन उनके साथ यहां भी उल्टा हो गया।

फिल्म कारों के अनुसार इस नौजवान को अभिनेता होना चाहिए क्योंकि बचपन में उन्होंने दिलीप कुमार की फिल्मों में काम किया था। इस तरह परीक्षित साहनी की पहली फिल्म अनोखी रात रिलीज हुई जिसमें संजीव कुमार शहनायक थे फिल्म के दौरान राज कपूर मेरा नाम जोकर बना रहे थे क्योंकि राज कपूर के रिश्ते रसिया के साथ अच्छे थे इसलिए फिल्म के निर्माण के दौरान उन्हें यह कैसे इंसान की जरूरत थी जिसे रूसी भाषा की समझ हो। परीक्षित साहनी ने राज कपूर को असिस्ट किया। धीरे–धीरे फिल्म निर्माताओ ने परीक्षित साहनी को बतौर एक्टर चुनना शुरू कर दिया। अनोखी रात के बाद उनकी 1970 में पवित्र पापी रिलीज हुई जिसमें बलराज साहब भी थे यह उस जमाने की जबरदस्त हिट फिल्म थी। 1970 के बाद परीक्षित को चरित्र भूमिका में मिलने लगी इससे उन्हें संतुष्ट मिलने लगी क्योंकि वह अपने पिता को अपना आदर्श मानते थे।

विकसित भारत 2047 युवाओं की आवाज पहल का हुआ शुभारम्भ

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कान्फ्रेंसिग के माध्यम से विकसित भारत 2047 युवाओं की आवाज पहल का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने इस पहल की शुरूआत में देश भर के राजभवनों में आयोजित कार्यशालाओं में विश्वविद्यालय के कुलपतियों संस्थानों के प्रमुखों, और संकाय सदस्यों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आज हर संस्थान हर व्यक्ति को इस संकल्प के साथ आगे बढ़ना चाहिए कि उनके हर प्रयास और कार्य विकसित भारत के लिए होंगे।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षक और विश्वविद्यालय भारत को तेज गति से एक विकसित देश बनाने के तरीकों के खेजने पर विचार करें और एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में सुधार के लिए विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान भी करें। उनहोने सभी से विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण में योगदान करने के लिए अपनी सीमा से परे जाकर काम करने का आग्रह किया। उन्होंने अधिक से अधित युवाओं को इस अभियान से जोड़ने के लिए और हर कॉलेज और विश्वविद्यालय में विशेष अभियान चलाने का सुझाव दिया।

बाल महोत्सव 19 से

भोपाल। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आगामी 19–21 दिसंबर तक राज्यस्तरीय और राष्ट्रीय बाल रंग महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। संयुक्त संचालक लोक शिक्षा भोपाल संभाग अरविन्द शोणगड़े के अनुसार, राज्य स्तरीय बलरंग में प्रदेश के सभी संभागों के एक हजार छात्र छात्राएं और राष्ट्रीय बाल रंग में विभिन्न राज्यों के लगभग 500 छात्र–छात्राएं प्रतिभाग करेंगे।

ठंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में आयोजित बाल रंग महोत्सव की थीम आत्म निर्भर भारत होगी, जिसमें प्रदेश के छात्र छात्राएं अपने जिले की सांस्कृतिक वेश भूषा नृत्य और खानपान आदि को विभिन्न मंचों पर प्रदर्शित करेंगे। लगभग 20 राज्यों से सहभागिता करने आ रहे छात्र–छात्राएं अपने राज्य के लोकनृत्य भी प्रस्तुत करेंगे।

नमांकन की अंतिम तिथि घोषित

जयपुर। राज्य की कर्णपुर विधानसभा क्षेत्र के चुनाव के लिए गत दिनों अधिसूचना जारी होने के साथ ही नामांकन प्रक्रिया शुरू हो जायेगी। मुख्य निर्वाचक अधिकारी प्रवीण गुप्ता के अनुसार, चुनाव के लिए 19 दिसंबर तक नामांकन पत्र भरे जायेंगे। 20 दिसंबर को नामांकन पत्रों की जांच की जायेगी। इच्छुक उम्मीदवार 22 दिसंबर मे नाम वापस ले सकेंगे। मतदान पांच जनवरी 2024 को होगा।

कुत्ते भी गाते हैं आरती!

बक्सरः बिहार के बक्सर में एक ऐसा मंदिर है, जहां दशकों से आरती में कुत्ते नियमित रूप से भाग लेते हैं। 1965 में इस मंदिर का निर्माण हुआ। तभी से इस काली मंदिर में सुबह और शाम की रस्मों में कुत्तों की शिरकत होती रही है। प्रार्थना शुरू होने से पहले आसपास के सभी कुत्ते मंदिर के दरवाजे के सामने खड़े हो जाते हैं। शंख, ध्वनि और झाल–मंजीरे की आवाज के बीच कुत्तों के भौंकने की आवाज जब घुल–मिल जाती है, तो प्रार्थना का स्वरूप अनूठा हो जाता है। बरसों से यही परंपरा चली आ रही है। मंदिर के एक पुजारी ओम प्रकाश पांडे कहते हैं कि सभी जीव–जंतु ईश्वर की संतान हैं। कुत्ते तो इंसान के वफादार साथी रहे हैं। बाहरी लोगों को भले ही प्रार्थना में कुत्तों की भागीदारी पर हैरत होती हो, लेकिन यह परंपरा पिछले 40 सालों से भी अधिक समय से चली आ रही है।एक भक्त महावीर सिंह कहते हैं कि जैसे ही शंख ध्वनि के साथ प्रार्थना शुरू होती है और भक्त झूमने लगते हैं। कुत्ते भी भौंक–भौंक कर अपनी आस्था प्रकट करते हैं। दर्जनों कुत्ते अपना सिर उठा कर जोर–जोर से प्रार्थना के वक्त भौंकते हैं। प्रार्थना में भाग लेने वाले अधिकांश कुत्ते मंदिर के इर्द–गिर्द घूमते रहते हैं। एक भक्त ने कहा कि कुत्तों को सुबह और शाम होने वाली प्रार्थना का वक्त मालूम है। वे प्रार्थना से पहले मंदिर परिसर में आ धमकते हैं। उन्हें भक्तों द्वारा प्रसाद खिलाया जाता है। सबसे अहम बात यह है कि ये कुत्ते मंदिर परिसर में किसी भी भक्त के साथ शरारत नहीं करते।

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

–व्यवस्थापक

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com